प्रकाशक
मंत्री, सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी

●

प्रथम संस्करण : २
दिसम्बर, १९६१
मूल्य : एक रुपया पचास नये पैसे

●

मुद्रक
नरेन्द्र भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी

उपोद्घात

१ प्रास्ताविक

नामघोषा का संक्षिप्त रूपांतर, जो असमिया में प्रकाशित किया गया था उसका यह नागरी संस्करण मैत्री-आश्रम के प्रकाशन के तौर पर, सर्व-सेवा-संघ की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है, यह खुशी की बात है। वह असम के बाहर, और असम में भी लोक-भोग्य होगा ऐसी मैं आशा करता हूँ।

भारत की सब प्रांतीय भाषाओं का अध्ययन करने की जरूरत मुझे पड़ी। और प्रेमपूर्वक मैंने उनका अध्ययन किया। उससे मुझे बहुत आनंद हुआ और लाभ भी हुआ। भूदान के काम को भी उससे गति मिली। लेकिन उसके लिए अनेक लिपियाँ पढ़ने की तकलीफ आँख को हुई। वह कर्तव्य-भावना से सहन की गयी। अगर ये सब भाषाएँ नागरी लिपि में होतीं तो बहुत कम समय में और बिना तकलीफ के मेरा काम हो जाता। इसलिए मेरा आग्रह रहा है, कि ये भाषाएँ नागरी में भी लिखी जायें। मैं "भी" कह रहा हूँ "ही" नहीं। क्योंकि उन-उन लिपियों का अपना इतिहास है। शायद अपना अलग संस्कार भी है। और ममत्व तो है ही। इसलिए उनका अपना स्थान कायम रखकर उनके साथ नागरी भी चले तो भारत की एकता के लिए वह लाभदायी होगा।

हमारी पदयात्रा में जापान के एक भिक्षु भी हमारे कुछ महीने रहे थे। उनके पास जापानी सीखने का भी मुझे मौका मिला था। मैंने देखा कि जापानी के लिए नागरी बहुत अच्छी तरह चल सकती है। और इन दिनों,

शांति-निकेतन के प्रोफ़ेसर श्री नारायण सेन के साथ चीनी भाषा की पाठ्य पुस्तक हिन्दी में बनाने की कोशिश की। तब प्रोफ़ेसर साहब को महसूस हुआ कि चीनी शब्दों का ठीक उच्चारण नागरी में लिखा जा सकता है। चीनी और जापानी का यह अनुभव यहाँ मैं इसलिए बता रहा हूँ कि वे दोनों भाषाएँ एक सुबोध लिपि की तलाश में हैं। अगर भारतभर में नागरी चले तो यह भारत के बाहर भी काम दे सकती है, इसका हमें ख्याल आ जाय। और, यह तो भविष्य के गर्भ में है और उसकी मुझे कोई आसक्ति नहीं।

इस संस्करण में असमिया व्याकरण की रूपरेखा जोड़ी गयी है। अतः म कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया है। दोनों की मदद से हिंदी जाननेवालों को यह पुस्तक पढ़ने में लगभग हिंदी जैसी ही मालूम होगी। माधवदेव की भाषा पर व्रज भाषा का असर रहा है ऐसा असमिया के विद्वानों का मत है।

पुस्तक के रचनाक्रम के विषय में असमिया आवृत्ति की प्रस्तावना में विवरण आया है। वह प्रस्तावना इस पुस्तक में दी गयी है। इसलिए, इस विषय में और कुछ खास कहने का रहता नहीं।

* * *

२ अंतरंग निरीक्षण

अब हम ग्रंथ के अंतरंग को देखेंगे। प्रथम ही ध्यान खींचता है "मुक्तित निस्पृह जिटो"। मुक्ति के विषय में निरभिलाषता। भारतीय भक्ति-धारा का यह एक सर्वमान्य विचार है।

१ मुक्ति-निःस्पृहता

"नैनान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एकः—"दीनजनों को छोड़कर मैं अकेला मुक्त नहीं होना चाहता"। यह प्रह्लाद का वचन सुप्रसिद्ध है। लेकिन नामघोषा के आरंभ में ही इस विचार को पाकर चित्त सहज ही आकृष्ट होता है। पर उसका अर्थ यह नहीं कि मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य के तौर पर मुक्ति अमान्य है (१४४)।

जहाँ मुक्ति के विषय में भी निस्पृहता मानी वहाँ अन्य सब आशाओं का परित्याग अपेक्षित ही है (७८–९९)। भगवान् स्वयं "निराशा" के ईश्वर हैं (२ १)।

"निराशा" शब्द से रसहीनता न समझी जाय। प्रथम पद में ही "रसमय" भक्ति की माँग है। और ग्रंथ की समाप्ति 'एहु रस माधव मुक्तमति गावे' (५) इस वचन से होती है। इस तरह ग्रंथ की रचना रसादि-रसान्त है।

२ रसमय भक्ति

"रसमय" भक्ति तो सभी वैष्णवों ने मानी है। लेकिन उस रस में वे ऐसे बह जाते हैं कि भक्ति को वैषयिक शृंगार का रूप आता है। नामघोषा इस दोष से सर्वथा मुक्त है। यहाँ का सारा वातावरण अत्यन्त निर्मल है। हर साधन निर्मल होना चाहिए, इसीकी यहाँ चिंता है। निर्मल रति (९५, १११) निर्मल आनंद (२८४) निर्मल धर्म (१९७) निर्मल भक्ति (१११) निर्मल ज्ञान (९७) इस तरह अनेक स्थानों में निर्मलता पर जोर दिया है। जैसे शरद् काल पानी को निर्मल बनाता है वैसे हरि-नाम चित्त में प्रवेश करके, उसको निर्मल बनाता है (१९)। चित्त-नैर्मल्य के लिए ही भक्ति का विधान है (२६७)। अगर भक्ति के मिष से चित्त विषयासक्त हो जाय तो भक्ति ने आत्महत्या ही कर ली।

३ नैर्मल्य

जैसे भक्ति-मार्गी रस-कल्पना-ग्रस्त होकर, एक बाजू बह जाते हैं वैसे समाज-सुधारक लोग दुराचारों के खंडन में पड़कर दूसरी तरफ बह जाते हैं। तमोगुण के तीव्र खंडन में भी तमोगुण आ जाता है। दुराचारों का खंडन जरूर होना चाहिए। लेकिन वह सौम्य और सानुकंप होना चाहिए। माधवदेव ने यहाँ भी खंडन किया है, सौम्य रीति से किया है। जिसे मैं "अपहार" पद्धति कहता हूँ उसका दर्शन यहाँ होता है। "प्रहार" पद्धति प्रसंग में ही हुआ है (२२४)। एक जगह दुर्जन को "सज्जन" ही कहा है (२९७)।

४ सौम्य रीति

नाम-स्मरणादि भक्ति-मार्ग सबके लिए खुला है। 'मारो मोट पवन' हरि-नाम से तरते हैं। अन्त्य-जन हरिनाम से मुक्त होते हैं (२९७)। राम-नाम से "गिरि भासम कठारी" तरते हैं (४४४)।

७. मुक्त-द्वार

यहाँ सर्व वर्णों के लिए मुक्त-द्वार है। यह धर्म कुछ खास धार्मिकों के लिए न होकर पृथ्वी के सब मानवों के लिए है। अर्थात् वह मानव-धर्म है (४१८)। इससे भी आगे जाकर कहना चाहिए, कि इस पर सब प्राणियों का अधिकार है (१९७)। इस विषय में गजेन्द्र मोक्ष आदि कथाएँ, मशहूर ही हैं (९९, २९२)।

८. भक्ति–स्वतंत्र और स्वयंपूर्ण

केवल भक्ति से ही उद्धार संभव है। भक्ति स्वतंत्र और स्वयंपूर्ण साधन है। यह भक्तिमार्ग की निष्ठा है। "भगति स्वतंत्र सकल सुख खानी" यह तुलसीदासजी का वचन सब जानते हैं। नामघोषा में भी यही विश्वास दीखता है (२२९, २१)। भक्त के लिए इस प्रकार का विश्वास स्वाभाविक ही नहीं अनिवार्य है। अन्यथा भक्त अपनी भक्ति को ही खंडित करेगा।

९. भक्ति में ज्ञान का स्थान

इसका अर्थ यह नहीं कि ज्ञान को भक्ति में स्थान ही न हो। "साधन सोपान" का विवरण करते हुए माधवदेव कहते हैं "भक्ति चित्त को शुद्ध करती है। सहज ही उसमें से वैराग्य और बोध का लाभ होता है जिससे परम-पद की प्राप्ति होती है" (४६८)। लेकिन वह बोध भक्त को भगवत् प्रसाद से मिलता है ऐसी भक्तों की मान्यता है (११)। तदनुसार एक जगह, भगवान् ने उद्धव विज्ञान सहित की माँग भी की है (११८)। "विज्ञान" यानी अनुभव-ज्ञान जिसके लिए "बोध" या "प्रबोध" शब्द प्रयुक्त है (२ ८)। ज्ञान तार्किक भी हो सकता है। तार्किक ज्ञान से कोई लाभ नहीं (२१४)। लेकिन गुरुनिष्ठ बुद्धि से लब्ध हुए ज्ञान का महत्त्व भक्ति-मार्ग में सुरक्षित है।

इस सिलसिले में शब्द ९६ ध्यान खींचे बिना नहीं रहता। एकांगी भक्ति-मार्गी बुद्धि को बहुत ही गौण स्थान देते हैं। वैसा नामदेव ने नहीं किया है, बल्कि उस शब्द में शास्त्र गुरु और शिष्य तीनों की एका शिष्य-प्रज्ञा पर निर्भर है यहां तक वे कह गये हैं। शिष्याप्रज्ञाचे गुरोऽप्रगः एकाग्रमन का रिवाज पड़ गया है। लेकिन यह शब्द बता रहा है "शिष्यप्रज्ञाचे शिष्यस्यैव दृश्य" (२५५)।

मुक्ति ज्ञान-निरपेक्ष कही जाती है वैसे वह कर्म-निरपेक्ष भी है। मूढ़ कर्म-श्रद्धा तो भक्ति-विरोधी भी हो जाती है (१८२)। लेकिन कर्म अगर भक्ति के अंग के तौर पर किया जाता है, तो उस कर्म को सेवा का रूप आता है। उसको नामघोषा में न सिर्फ मान्यता दी है बल्कि उसको "सेवा-रस" नाम दे दिया है (५)। नामघोषा का यह विशेष शब्द मानना चाहिए। गांधीजी जो इस जमाने के बड़े कर्मयोगी थे अपने कर्म-योग को सेवा" ही नाम देते थे।

१ भक्ति में कर्म का स्थान

नामघोषा में भक्ति का स्वरूप "ईश्वर-शरणता" है। भगवद्गीता का यही निचोड़ है। पैगम्बर ने भी इसी पर जोर दिया था। "इस्लाम" शब्द का अर्थ ही ईश्वर शरणता है। इच्छा-स्वातंत्र्य जो मनुष्य के पुरुषार्थ का मूलाधार है ईश्वर-शरण भक्त को अपराध-सा मालूम होता है (११ -११२)।

११ भक्ति का स्वरूप — ईश्वरशरणता

ईश्वर के स्वरूप के विषय मे भी भक्त की अपनी एक रुचि होती है। वह जानता है कि ईश्वर नित्य-शुद्ध-बुद्ध है (११ १५७)। फिर भी भक्त के लिए वह करुणामय है। न सिर्फ वह करुणा का सागर है बल्कि करुणा की बहती हुई नदी भी है (११९)। स्वजन हीन मानवता के लिए (१२) परमेश्वर का करुणामय होना एक व्यावहारिक आवश्यकता है। अतीत की गर्जना करनेवाले

१२ ईश्वर-करुणामय

शंकराचार्य को भी "नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ" कहना पड़ा है। और "रहमानुर रहीम" के विशेषणों से अल्ला पहचाना जाता है, इसका यही कारण है। हमारे सहस्र-सहस्र अपराधों के लिए, हम प्रभु से क्षमा तो माँगते ही हैं (१०)। लेकिन उसके मंदिर में प्रवेश करने के लिए हम पर "बेन्त-प्रहार" हुआ तो भी उसको हम मान्य मानेंगे। प्रभु हमारे अपराधों के लिए दण्ड देना पसंद करेंगे तो उनकी हम पर वह कृपा ही होगी (१७)। हमको क्षमा करना या हमें दण्ड देना हम उन्हीं पर सौंपते हैं। और उनसे इतनी ही प्रार्थना करते हैं कि "करियो कृपा येन उचित हय" (१७८)।

ईश्वर की करुणा दर्शाने के लिए, नामघोषा में ईश्वर को पिता गुरु आदि का स्थान दिया है (७९, १५१, २७६ इ.)। मातृस्थान कम पाया जाता है। दक्षिण भारत के भक्तों ने ईश्वर को मातृ-रूप में देखा है, परन्तु उत्तर भारत में ऐसा नहीं दीखता। शक्ति के उपासक मातृ-उपासना करते हैं वह अलग बात है। लेकिन ईश्वर को स्वयं मातृ-रूप मानकर, सहस्रों पदों में ईश्वर का स्तवन दक्षिण भारत में मिलता है वह वहाँ की एक खास चीज है। रवीन्द्रनाथ ने "जननी तोमार करुण चरणखानि" इत्यादि पद्य किये हैं तथापि "तुमि आमादेर पिता" यही मुख्य ध्वनि है। बाइबिल में भी ईश्वर को "फादर" के रूप में देखा है। वेद की प्रार्थना "पिता नोऽसि पिता नो बोधि" प्रसिद्ध ही है—यद्यपि वेद में "त्वं माता शतक्रतो बभूविथ" ऐसे भी वचन आये हैं। मातृ भावना के अभाव की पूर्ति नामघोषा में दो स्थानों में धेनुवत्स-दृष्टान्त से की है (१२८, ४२५)।

११ शक्तिस्वरूपों का विकास— मातृभाव

नामघोषा कोई दार्शनिक ग्रंथ नहीं है। वह भक्ति और प्रार्थना की पुस्तक है। लेकिन तत्त्वज्ञान का जो आनुषंगिक दर्शन उसमें आया है, वह अपने में परिपूर्ण है।

ईश्वर सगुण या निर्गुण? इसका उत्तर दिया है, "निर्गुण सगुण और गुणनियंता" (१४८)। इससे बेहतर उत्तर नहीं हो सकता। जीव और ईश्वर का संबंध 'आमिओ अंश तोमार' (७५)। ईश्वर ही एकमात्र सत्य बाकी सब "चराचर मायार कल्पित" जैसा विनोदरूप (२४)। अनात्मा में आत्म-बुद्धि दुःख का कारण (१५४)। 'इंद्रियगण भूत प्राण बुद्धि मन' यह सब जड़उपाधि है (१९२)। फिर भी जड़ और चेतन के बीच रहने का नाटक मन कर सकता है। जिसका मन जिस पथ में लगेगा वैसा ही उसका जीवन बनेगा। (२१२)। परन्तु महान् पुण्य से प्राप्त हुई है जिसमें मुक्ति की क्षमता है (१ १)। लेकिन गलत काम करके कई दफा, हम यह खो चुके हैं (१९१)। और आग भी भक्तिहीन जीवन जीयेंगे तो खो सकते हैं यहाँ तक कि 'पुन तव भिक्षा' भी बन सकते हैं (२९९)। यह है नामदेव का तत्त्वज्ञान। और उसको उन्होंने "शुद्ध-मत" नाम दिया है (२२१)। मैं इससे "भक्ति-प्रधान एकेश्वर-निष्ठ, अद्वैत" समझा हूँ।

१४ तत्त्वज्ञान

यहाँ पर एक बात ध्यान में लेने की है कि यद्यपि भक्ति-प्रधान होने के नाते नामदेव विधि-मुक्ति चाहनेवाले हैं (४ १) तथापि वेद-मर्यादा का उल्लंघन वे सहन करनेवाले नहीं (१११)। कहते हैं 'जो श्रुति-स्मृति की आज्ञा का उल्लंघन करेगा वह चाहे भगवान् का भक्त भी हो वैष्णव नहीं कहा जा सकता' (१५१)। श्रुति-जननी के पद-चिह्न पर हम चल रहे हैं ऐसा उन्होंने दावा किया है (१४८)। लेकिन उत्कट भक्ति और परम वैराग्य में विधि-मर्यादाएँ टिक नहीं सकती यह भी वे कह देते हैं (११५-११७)।

१५ वेद-मर्यादा

एक प्रश्न और उठता है। मूर्तिपूजा के विषय में नामदेव का क्या रुख है? असम प्रदेश में हर गाँव में 'नामघर' होता है। और उसमें मूर्ति नहीं रखी जाती बल्कि ग्रंथ रखा जाता है। रामानुज मध्व वल्लभ चैतन्य आदि सब मूर्ति को माननेवाले हैं। यहाँ तक कि निर्गुण ब्रह्मवादी होते हुए भी शंकराचार्य ने

१६ मूर्तिपूजा

बिखरे हुए पंथों के समन्वय के लिए ही क्यों न हो, पंचायतन-पूजा चलायी। इस लिहाज से नामघरों में मूर्ति का न होना एक विशेष सुधार माना जायगा। लेकिन जहाँ तक नाम-घोषा का ताल्लुक है उसमें मूर्तिपूजा का निषेध या अनादर नहीं है, बल्कि आदर ही सूचित है (२२)। भगवान् को जैसे "मूर्तिशून्य" कहा है (१८१) वैसे ही "मधुर-मूरति" भी कहा है (४८१)। यही ठीक है। भगवान् अमूर्त ही हैं ऐसा हम आग्रह रखेंगे तो वह एकांगिता होगी। "द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे। मूर्तं चैव अमूर्तं च" (बृहदारण्यक २३१)। इस तरह, ब्रह्म के दो रूप उपनिषदों ने भी कहे हैं। मूर्त में जो अमूर्त छिपा हुआ है उसका ख्याल न करते हुए, अगर मूर्ति की पूजा की जायगी तो वह जड़-पूजा होगी। और जड़-पूजा का निषेध अवश्य करना चाहिए (२१६)। मूर्ति-पूजा को "द्वापर-युगीन धर्म" कहा गया है। और कलियुग के लिए नाम-संकीर्तन साधन बताया है (४३५)। इसका अर्थ इतना ही है कि पूजा के लिए बाह्य साधन-सामग्री की और पूजा विधि के ज्ञान की अपेक्षा रहती है। ऐसी कठिनाई हरिकीर्तन में नहीं है। इसलिए हरिकीर्तन छोड़कर अगर कोई पूजा आदि में रमता तो उसका वह श्रम-मात्र होगा (४३६)। नाम-संकीर्तन की यह महिमा निःसंशय है। और उसमें जो तन्मय होगा उसको पूजा आदि की जरूरत नहीं रहेगी यह भी स्पष्ट है। हिन्दू-धर्म में पूजा लाजिमी या अनिवार्य नहीं मानी है। वैसे उसका अनादर भी नहीं है। "मूर्तिं च नामशतानि" यह हिन्दू-धर्म की वृत्ति है। वैसी ही नामघोषा की है।

१० सामाजिक पुरुषार्थ की एक दिशा

एक सामाजिक सुधार की बात जिसके लिए हम माधव-पुरुषार्थ करना पड़ता, माधवदेव न नामघोषा में सुझायी है। भांग अफीम आदि के सेवन से समाज भ्रष्ट हो इसकी तड़पन उनके हृदय में थी। इसका दर्शन घोषा ३५५ में मिलता है। वह बात तो भर्तृहरि के एक श्लोक का तर्जुमा है। उसका नामघोषा में अतिशय विषय का भाव सीधा

संबंध नहीं है। फिर भी इसको नामघोषा में स्थान देकर, उन्होंने अपना विशेष मनोभाव प्रकट किया है। "आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः" यह भारत भूमि का अपना विचार है। इस विषय में अनेक प्रयोग प्राचीन-काल से आज तक भारत में किये गए हैं। लेकिन अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उसके लिए 'दधि दुग्ध घृत मधु' (१८५) यह उपाय भी नामघोषा में सूचित है। और भी कई वैज्ञानिक खोजें करनी पड़ेंगी। देखना है भारत यह कब कर सकता है।

१८. परिचित वातावरण

जिनको भारत के भक्ति-साहित्य का परिचय है उनको नामघोषा में अपना चिर-परिचित वातावरण ही मिलेगा। पचास साल पहले बचपन में मैं महाराष्ट्र के संतों के भक्ति-साहित्य में निरंतर निमग्न रहता था। पचास साल के बाद अब नामघोषा पढ़ने लगा तो मुझे भास हुआ कि मैं मराठी ही पढ़ रहा हूँ। वे ही विचार, वे ही शब्द और कभी-कभी तो वे ही वाक्य दीख पड़े। मिसाल के तौर पर—

१ 'हरि तैसे हरिचे दास" (तुकाराम)
 'हरि येन अति कृपामय
 भकत मुकुतो सेहि मत" (४७२)

२ "तुझ्या नामाचा महिमा। तुज न कळे पुरुषोत्तमा' (तुकाराम)
 'आपुन नामर महिमाक हरि
 आपुनि अन्त नपावन्त" (४१५)

३ 'सेवा-चोर पापा पापी' (तुकाराम)
 'मइ मन्दमति पापी सेवा-चोर' (१५१)
 यही "सेवा-चोर" शब्द और भी दो जगह आया है (७६, १९९)।

४ नामघोषा है तो असमिया भाषा में लेकिन मैंने कहीं-कहीं उसमें मराठी ही पढ़ लिया! जैसे—

नामघोषा के एक पद में मिल जाता है— 'हरि-भक्ति के राजमार्ग में हम आनंदित होकर घूम रहे हैं। गुरु-पद-नखचंद्रिका का सौम्य प्रकाश मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध है। मुक्ति पापनी के पद-चिह्न दीख रहे हैं। गिरने का कोई सवाल नहीं" (१४८)। यह चित्र असम की यात्रा में सतत मेरी आँख के सामने रहा। इसलिए, यहाँ के मेघाच्छन्न वातावरण में भी कोई दिन मुझे 'दुर्दिन' नहीं मालूम हुआ (२ ७)।

अंत में जिस घोषा का जिक्र मैंने हमारे असम प्रवेश के पहले दिन किया था उसका यहाँ फिर से स्मरण करता हूँ—

'अधमे मैबके दोष अवम मध्यमे गुण-
१ गुणग्रहण दोष दुये करिया विचार
उत्तमे मैबके गुण लवम उत्तमोत्तमे
अल्प गुण करय बिस्तार" (४)

श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

भूदान-पदयात्रा,
बालंगीर जिला
(ओड़िसा)
१६ ११ ६१

असमिया आवृत्ति की प्रस्तावना

हमारी पद-यात्रा का 'मुख्य उत्पादन' है भूदान-ग्रामदान। पर उसके साथ-साथ उसमें दूसरे अनेक गौण उत्पादन होते रहते हैं। महापुरुष श्री माधवदेव के 'नामघोषा' की यह संक्षिप्त आवृत्ति वैसा एक गौण उत्पादन है। पद-यात्रा के सिद्धान्त से तो यह गौण है, लेकिन लोकोपयोग के ख्याल से गौण नहीं। भारत के हृदय को जोड़ने का काम उससे अपेक्षित है।

इस साल की पद-यात्रा के बाद ५ मार्च १९६१ के दिन हमने रमणीय असम प्रदेश में प्रवेश किया। तब से अब सालभर बीत गया। यहाँ के समाज के साथ एकरूप होने की 'देहे मने प्राणे' हमने कोशिश की। उसका एक अंश था असमिया के आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन।

दो महापुरुषों को इस भूमि ने जन्म दिया जिनका नाम यहाँ तो घर घर चलता है, यद्यपि भारत के बहुत से लोगों को उनका पता नहीं। इसमें किसीका दोष नहीं। ईश्वर की योजना में हर चीज का एक मौका होता है। उसी मौके पर वह चीज बनती है। वह मौका अब आया दीखता है। महापुरुषों ने लोकहृदय-सम्पर्क के हेतु से प्रादेशिक भाषा में किया। लेकिन प्रादेशिक अभिमान उन्होंने नहीं रखा था। 'भारत भूमित जनम लभिया' (घोषा*—२७८) 'भारत उत्तर द्वीप' (घोषा—४ ७) इत्यादि अनेक वचन उनकी विशाल भावना के निदर्शक हैं। इतना ही नहीं जिस तरह आजकल हम 'जय जगत्' कहते हैं, वैसा ही वे कहते थे 'जयवर्ग-योग्य नर

---

*'नामघोषा' के श्लोकों को 'घोषा' कहते हैं।

तनु पाया पृथिवीत' (चौपा—१०२) ऐसी भाषा विश्वात्मा बनकर ही वे बोल सकते थे।

असमिया के आध्यात्मिक साहित्य का मेरा जो बहुत ही थोड़ा अध्ययन हुआ है उसमें 'नामघोषा' ने मुझे विशेष आकर्षित किया। इस पुस्तक को मैंने अनेक बार पढ़ा। उसके कई वचन मेरे कंठ में बैठ गये। उसकी संगति में मुझे मित्र-संगति का आनन्द मिला। उसका मैंने अपने लिए एक संक्षेप कर लिया जो सब साधकों के उपयोग के लिए प्रकाशित करने का सोचा गया।

मूल सहस्र पदों में से इसमें ५५६ पद चुने हैं। संख्या-अंकन दूसरे प्रकार से किया होने के कारण पद-संख्या ५ हो गयी है। ३ अध्यायों में और २ खण्डों में उसे विभाजित किया है। मुख्य तीन विभाग बनाये हैं —(१) प्रार्थना (२) उपदेश (३) महिमा। प्रथम विभाग में भगवद्-प्रार्थनाएँ, भक्तहृदय की व्याकुलता आत्मनिरीक्षण आदि का समावेश किया है। दूसरा और तीसरा विभाग पूर्णतया विभक्त नहीं है। उपदेश में महिमा मिलेगी महिमा में उपदेश का भी अंश मिलेगा। 'प्राधान्येन निर्देशः' इस नियमानुसार ये विभाग हैं। तर्कशास्त्र में जिस तरह का विश्लिष्ट चिन्तन होता है, वैसा भक्ति में नहीं होता। भक्ति में संश्लिष्ट और समन्वित चिन्तन होता है। इसलिए ये विभाग अन्योन्य मिश्र से हैं—दुग्ध-अमृत के रसों के समान।

विभाग अध्याय खण्ड आदि रचना में पदों का आज का क्रम स्वाभाविक ही बदल गया है। बोतल में रखी हुई दवा पीने के पहले हिला करके पीनी चाहिए ऐसा औषधोपचार का रिवाज ही है।

माधवदेव ने बरगीत भी लिखे हैं। हर बरगीत के अन्त में उनका नाम अंकित है जैसा कि ऐसे भजनों में हमेशा हुआ करता है। नामघोषा में उनका नाम चार दफा आता है। ग्रन्थ-समाप्ति में एक दफा तो अपेक्षित ही है, पर और तीन दफा क्यों आया होगा? नामघोषा को तीन विभागों में मैंने विभाजित किया उसको आशीर्वाद के तौर पर यह पूर्व-योजना की गयी ऐसा मैंने मान लिया।

अध्यायों और खण्डों के नाम जो असमिया में हैं स्पष्ट ही हैं। कुछ नाम संस्कृत में दिये हैं, जो पुराने ग्रन्थों से लिये गये हैं। कुछ सांकेतिक हैं जिनका अर्थ समझ लेने के लिए चिन्तन की जरूरत रहेगी। उदाहरणार्थ 'रत्नत्रय' (अध्याय–२४)। बौद्ध जैन आदियों ने अपने-अपने ढंग से 'रत्न-त्रय' की कल्पना की है। जैनों में 'रत्नत्रयधारी' ऐसा बच्चों का नाम भी रखते हैं। नामघोषा में 'रत्नत्रय' एक विशिष्ट वैष्णव-संकेत है। (१) सर्वज्ञ गुणवर्णन (खण्ड–१५९) (२) पुरुषार्थ प्रेरणा (खण्ड–११) और (३) विधि-मुक्ति (खण्ड–१११) ये भक्तिमार्गीय रत्नत्रय हैं। दूसरा उदाहरण 'विघ्नत्रय' (खण्ड–१४९)। कल्पतरुनाद-श्रवण (घोषा–१८) में तीन विघ्न आते हैं—विविध पुण्यासक्ति (घोषा–३८१) विषय-वासना (घोषा–३८२) धर्म-विचार (घोषा–३८३)। इस तरह जहाँ सांकेतिक नाम होंगे वहाँ पाठकों को चिन्तन से उनका खुलासा कर लेना चाहिए।

इसमें लिये हुए पाठ अक्सर श्री गेडौंग की आवृत्ति में से हैं। अन्य प्रकाशनों में से भी कुछ लिये हैं। एक जगह मैंने अपनी ओर से मूल संस्कृत पद्यानुसार, पाठ-संशोधन किया है (घोषा–१४)।

अध्यायों में 'गीता-निर्णय' नामक १८वाँ अध्याय पाठकों का ध्यान खींचेगा। इसमें से अनेक पद्य नामघोषा में एक स्थान में हैं और कुछ अन्य

स्थानों से एकत्रित किये गये हैं। माधवदेव का गीता का निष्कर्ष श्रीधर भाष्यानुसारी है (घोषा–११)। 'गीता ही एकमात्र शास्त्र है' ऐसी अपनी निष्ठा ग्रंथकार ने व्यक्त की है (घोषा–१ ५)।

नामघोषा के जो पद यहाँ लिये हैं, उनमें कम-से-कम आधे पद अन्यान्य संस्कृत ग्रन्थों से लिये गये हैं। बाकी के उनके हृदय के सहजोद्गार हैं। दोनों समीचीन और हृद्य हैं। असमिया साहित्य में तो शायद नामघोषा अद्वितीय ही है। भारतीय भाषाओं में भी उसका अपना एक स्थान रहेगा।

भगवन्नाम-स्मरण को मुख्य केन्द्र बनाकर उसके इर्द-गिर्द अनेक जीवन-मूल्यों को माधवदेव ने सूचक ढंग से ग्रथित किया है। उनका विवरण यहाँ देने की आवश्यकता मैं नहीं मानता। मेरे कई भाषणों में इसके अनेक पदों का सहजभाव से विवरण हुआ है। उतने से मैं फिलहाल संतोष करना चाहता हूँ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

मुकाम-सरपाथार,
सुवर्णश्री अंचल
(असम)
२२-९-६२

विनोबा का
जय जगत्

महापुरुष श्री माधवदेव का अल्प जीवन-परिचय

असम के उत्तर लखीमपुर जिले में महापुरुष श्री माधवदेव का जन्म सन् १४८९ में हुआ। उनके पिता का नाम गोविन्द था और माता का नाम मनोरमा था जो महापुरुष श्री शंकरदेव की बहन थी।

माधवदेव का बचपन बहुत कष्ट में गुजरा। बचपन में ही वे खेतीबाड़ी के काम में लग गये। पंद्रह साल की उम्र में ब्याज वसूल करने के काम में मदद करने लगे। वर्तमान पाकिस्तान के रंगपुर जिले में उनका संस्कृत व्याकरण न्याय तर्क आदि शास्त्रों का और पुराणों का अध्ययन हुआ।

पिता के देहांत के बाद, उन्होंने सुपारी और पान का व्यवसाय आरंभ किया। राज्य के पूरब से लेकर पश्चिम तक वे नौका से कारोबार चलाने लगे। इन्हीं दिनों में उनका श्री शंकरदेव से संबंध आया। माधवदेव शाक्त विचार के थे। श्री शंकरदेव के साथ चर्चा करने के बाद उन्होंने शंकरदेव का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। इस समय उनकी आयु ३२ वर्ष की थी और शंकरदेव की ७२।

अब माधवदेव व्यवसाय छोड़कर गुरु-सेवा में मग्न हो गये। पांडित्य के साथ ही उनमें काव्य-दर्शन भी थी। और वे संगीत-शास्त्र के भी ज्ञाता थे। उनके सम्मिलित होने से वैष्णव-सत्र (मठ) और असम प्रदेश हरि-कीर्तन की ध्वनि से गूंज उठा।

इनमें आहोम राजा क्षुब्ध हो गये। अन्य पुरोहित-वर्ग ने भी राजा को इस नव वैष्णव धर्म के खिलाफ उभाड़ा। राजा ने उन्हें पकड़ने के लिए सेना भेजी। सेना माधवदेव को और शंकरदेव के दामाद हरि भूञा को पकड़कर ले गयी। हरि भूञा की हत्या की गयी और माधवदेव को ६ मास कैद में रखा गया।

सोलहवीं सदी के आरंभ में पश्चिम कामरूप में कोच राज्य का उदय हुआ। कोचराजा नरनारायण विद्यानुरागी और धर्मपरायण पुरुष थे। कैद से छूटने के बाद, माधवदेव आहोम-राज्य छोड़कर कोच-राज्य में चले

गए। वहाँ वर्तमान बरपेटा के नजदीक सत्र की स्थापना करके भक्ति-प्रचार करते रहे।

माधवदेव प्राय अपने गुरु के साथ ही रहा करते थे। शंकरदेव ११९ वर्ष का दीर्घ जीवन जीकर, सन् १५६८ में कोच-राज्य की राजधानी कूचबिहार में बैकुंठ पधारे। उनके बाद २८ साल तक माधवदेव कार्य करते रहे। बीच-बीच में उन्हें राजकोप भी सहना पड़ा। सन् १५९६ में ८७ वर्ष की अवस्था में कूचबिहार में ही उनका महाप्रयाण हुआ। माधवदेव आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

प्रचार का कार्य मुख्यतः माधवदेव ने ही किया। एक प्राचीन कवि ने लिखा है

"शंकरे भकति प्रकाशिला मात्र
माधवेसे प्रचारिला।"

इसका सबूत असमभर फैले वैष्णवों के सत्र हैं। उनमें से अधिकांश सत्रों की स्थापना माधवदेव ने की है। भाद्रपद मास के बदी पंचमी को, इस महाभागवत की सारे असम में श्रद्धा भक्तिपूर्वक पुण्यतिथि मनायी जाती है।

नामघोषा-सार के व्याकरण की
संक्षिप्त रूपरेखा

असमिया व्याकरण हिन्दी मराठी गुजराती के जैसा जटिल नहीं। न भाषाओं में लिंग-विचार के कारण जो तकलीफें होती हैं उनसे असमिया आदि पूर्वी भाषाएँ बरी हैं। नामघोषा तो और ही सरल है। क्योंकि उसमें बहुत सारे शब्द, संस्कृत या संस्कृतोद्भव हैं। इनके अलावा दूसरे शब्द घोषा-सार में बहुत ही थोड़े हैं।

विभक्ति आदि के प्रत्यय जोड़ने में भी खास कठिनाई नहीं। इसलिए यहाँ पर, विवरण की विधियों में न पड़कर, जो रूप आम हैं उनकी वर्गीकृत तालिकाएँ देकर, हमने समाधान माना है।

ग्रंथ पढ़ना शुरू करने के पहले इन तालिकाओं पर सरसरी नजर डाली जाय तो पढ़ते-पढ़ते आशय समझने में मुश्किल नहीं होगा। कठिन शब्दों के अर्थों के लिए, आखिर में कोश है ही।

विभक्ति–

१ महाते मृत्युवे – पापमात पितृगण
२ ४ मकरक यमतक, हरिदाक
३ उपदेशे कृपाय
५ वैकुंठरपरा अधर्मतो देहार, देवकीर हन्ते (अपेक्षा) मोत परे, बहुती करि
६ मामर, गुणेर
७ मुकितत देवाते चरण धाम्मा माज पजर मिनरे

नोट—प्रथमा में 'मान' और 'वर्ग' लगाकर बहुवचन किया है।

सर्वनाम–

'मइ' के रूप मइ, आमि हामो मोत मोरे आम्हार आमाक मोरे मोत परे मोर, माहोर, मेरि, मोरे, आमार आम्हार, हामारे मोरे आम्हार

भूत

उ पु – मैला मैछोहा पाइओ

म पु – भैला भछाहा भैकि

तृ पु – करिल करिल करिलेक हुएइस नियाइलेक भैला, करिला

भविष्य

उ पु – करिओ एराइबो हुइबोहो

म पु – पाइबा पाइबि

तृ पु – हैव हैव हुइबे हैवक बुझिबक

आज्ञा-प्रार्थना – कर, करा करियो, करिओक करिओ करसु कराओ
(प्र) देला भिजाव

इच्छा-अनुज्ञा – होक हौक हुओक आवरोक

विधि – बुलिय जानिबा जानिबाहा करिते उचित करिते
जुवाइ, जानिव जुवाइ

नकार – धातुरूप के आरम में न नि नु, न नो लगाकर,
जैसे–नकर, निबिहिला नुहे नवे नोहुय इ

शक्य – 'पार' इस शक्यार्थी धातु के रूप लगाकर,
जैसे–तारित पारे, छरिवाक नपारे, करिबे पारे

कृदंत–

पूर्वकालवाचक– करि, करिया

वर्तमान कृदंत– चालंत (ओ)

भूत कृदंत– भैले

शब्द के अन्त में प्रयुक्त 'मि' का अर्थ "ही" होता है। जैसे–मोरहामे तेवेमे भवनेमे इ ।

शब्द के अंत में 'भी' के अर्थ में "ओ" कभी स्वतंत्र रूप से लगता है और कभी अन्य प्रकार में मिल जाता है। जैसे–मरमीओ मुनिओ इ ।

अध्यायानुक्रमणिका

खण्डानुक्रमणिका

अध्याय १३ : लोक-प्रवाह

अध्याय १४ भक्ति

अध्याय १५ : बुद्धियोग

अध्याय १६ : मूढजन-स्वभाव

अध्याय १७ जन्म-साफल्य

अध्याय १८ : गीता-निर्णय

अध्याय १९ पद-पद्म

अध्याय २ नीति

अध्याय २१ नियमन

३ महिमा

अध्याय २२ : कीर्तन-भवनादि

अध्याय २३ निरामय

अध्याय २४ रत्नत्रय

अध्याय २५ : प्रभाव

अध्याय २६ : प्रेरणा

अध्याय २७ : योग-सार

अध्याय २८ : नामामृत

अध्याय २९ : प्राप्ति

अध्याय ३ : पूर्णाहुति

नामघोषा-सार

१ प्रार्थना

२ साधन-श्रम परिहार

७ हे भगवन्त गरु तनु पदे मन मोर
त्रिकालत चितिक समय
तोम्हार कृपात लेवे समस्ते साधन-श्रम
एराइ सुखी हइबोहो निश्चय

८ हे प्रभु नरहरि तोम्हार चरण दुइ
प्रेमभावे स्मरण दुर्लभ
यथाकथञ्चित-रूपे अहर्निशे प्रभु मोर
सुमरण हयोक सुलभ

९ हे प्राण-बन्धु कृष्ण कृपार सागर हरि
कृपा-दृष्टि चाहियोक मोक
सहज वासना-रूप धरण वियोक नाथ
मोर अहङ्कार दूर होक

७ अन्तर्यामी-गुरु प्रार्थना

३ तुमि चित्त-वृत्ति मोर प्रवर्तक नारायण
तुमि नाथ मइ नाथवन्त
चरण-छत्रर छाया दिया दूर करा माया
करा दाया मोक भगवन्त

४ तुमि मोर अन्तर्यामी तनु मृत्य मैसो आमि
आनि कृपा करा हृषीकेश
दान्ते तृण तुलि लमों भितरे सेवात रमों
दियो मोक मेहि उपदेश

५ तुमि भक्त-कल्पतरु बाहिरे भितरे गुरु
तुमि बिने नाहि मोर आर
कृपा करा हे हरि चरणत रक्षा करि
दिया मोक सेवा रस-सार

६ तुमि हरि कृपामय बाहिरत गुरु-रूपे
अनुग्रह करि आछा मोक
अन्तर्यामी गुरु रूपे ताके सत्य करा मोर
नमु नाम सदा रति हौक

१४ नमो नमो नारायण प्रसन्न हुयोक हरि
करियोक मायाक निर्माण
आपुसार महिमाक आपुनि देकत करि
जीवक करियो परित्राण

१५ तोम्हार मायाये हरि कपट गणक धरि
मुहियाछे आम्हाक समूलि
गुचायोक माया स्वामी तोम्हार चरणे आमि
भजिलोंहो जय जय बुलि

६ अपराध विनाशन

१६ मइ अनाथक दाया करहु परमानन्द
दास बुलि धरियो मनत
थैयो निज भृत्यर सङ्गत
आकुलि मुखत करो दान्ते तृण तुलि धरो
केश छिण्डि देखों चरणत

१७ अपराध-विनाशन तयु नाम नारायण
जानि नामे पशिलो शरणे
आन गति नाहिके मरणे
अपराध क्षमा करि तुमि दायाशील हरि
मोक रक्षा करियो चरणे

४ भक्ति प्रसाद

१ ममो राम कृष्ण हरि नारायण निरञ्जन
नमो देव देवकी-दायाद
परम अनाथ आमि तोमार चरणे नमि
मागो प्रभु भकति-प्रसाद

११ ब्रह्मा हर पुरन्दर आदि देव निरन्तर
आत सदा पशय शरणे
आर आन नाहि त्रिभुवने
भकतजनर बन्धु तुमिसे करुणा-सिन्धु
मोर गति तोमार चरणे

५ माया निस्तार

१ मायार निग्रहे मइ परम आतुर भैलो
प्राण यदुपति यदुपति
अनाथर नाथ हरि तुमि कृपामय चित्ते
मोर आर नाहि आन गति

१ मान्नान विमल हरि हैबार देखिया माया
मोर मनि करिल मोहित
एक हरि तनु पद समाने जिमते रहो
हेन कृपा करिब उचित

२ शोधना

८ असुनायना

२३ तोम्हारेसे अभिधाये आम्हाक मुहिले हरि
नजानोहो तोम्हार तत्त्वक
तोम्हार चरणे हरि शरण पशिया सार
करिलोहो तोम्हार नामक

२४ हे कृष्ण तुमि मात्र चैतन्य-स्वरूप नित्य
सत्य शुद्ध ज्ञान अखण्डित
मायार अनेक कटो तोम्हार विनोद रूप
चराचर मायार कल्पित

२५ तयु गुण नाम हरि केवले निगुण मात्र
मायार समस्ते गुणमय
एतेक जानिया हरि तोम्हार नामक नाम
करिलोहो सार कृपामय

७ क्षमापन

१८ हे प्रभु भगवन्त इटो संसारत यत
आछे पापी तार नाइ सीमा
सरणे पापियो मात्र पतित-पावन निज
देखा कोन नामर महिमा

१९ मोर सम पापी लोक नाहिके इ तिनि लोक
तुमि सम नाहि पाप-हारी
इ जानि गोविन्द मोक येन जुवाइ करियोक
तुमा पद कराहो गोहारि

सहस्र सहस्र आति अपराध दिन राति
करो मइ महामूढजन
आमि प्रभु तव दास आने मानि भगवास
क्षमियोक श्रीमधुसूदन

[illegible] भगत जानाहा मइ तथापि प्रवृत्ति माइ
अधमता निवृत्ति नोहय
हरि-चिन्तन हुया तुमि जन कराबाहा स्वामी
हरिदास करिबा तमय

नजानाहा भावाहन नजानोहो विसर्जन
पूजा मन्त्र नजानो विन्यित
तथापि परमेश्वर दाग भैलो परसन्न
पार नाहि गाथिब उचित

३ शुनियो हृदय हेर ब्रह्माण्ड भितरे यत
वस्तु आछे लोक गोलोकय
ताक तेजि कृष्ण-नाम अक्षय अमृत पिया
सन्तोषक रभियो हृदय

११ शुनियोक बुद्धि तोर केवल निश्चय धर्मे
तजि सबे बिनाशी बिषय
सदा शुद्ध सुमङ्गल अक्षय कृष्णर नाम
ताके मात्र करियो निश्चय

१२ शुन हेर अहङ्कार निश्चिन्त आपुन मार
मिथ्या अहम्ममक तजियो
परम ईश्वर कृष्ण हृयोक ताहान वास
साधु-सङ्गे कृष्णक भजियो

१३ शुनियोक चित्त हेर परम रहस्य वाणी
तुमि शुद्ध ज्ञानर आलय
कृष्ण नित्य शुद्ध बुद्ध परम ईश्वर देव
नाछाड़िबा ताहान आश्रय

१४ कृष्ण मिष्ट इष्टदेव आत्मा प्रियतम गुरु
सुहृद सोदर बन्धुजन
कृष्णे मोर मति गति कृष्णत भकति रति
कृष्ण-पावे मिमजोक मम

९ आत्म-सम्बोधन

२६ हे जिह्वा सदा तोर मधुरेसे मात्र प्रिय
आन तइ रसर सारक
आन नहि निरन्तरे करियोक नाम पान
नारायण-नाम-अमृतक

२७ हे जिह्वा तइ सदा आम्हात निर्दया भैलि
मन नोबोलस राम-वाणी
समार-सागरे छुटो हरिसे सुदृढ नाव
जानि हरि बसियो कल्याणी

… हे कर्ण सदा तोर सबद मात्रसे प्रिय
तइ शब्द मधर जानस
जानि अमतनाधिक परम मधुर शब्द
मन गमा कृष्ण-नाम-सदा

… मन मार नाम सङ्कल्प विकल्प-धर्म
नहि मिथ्या व्यापारमकम
सदाय सङ्कल्प नाम करिया सुहृद मन
कृष्ण-नाम परम मङ्गल

३ विनय

१२ शरण

३८ मइ दुराचार केवले तोम्हार
अपराधी नारायण
अभियोक हरि लैयो दास करि
पशिलो हेरा शरण

३९ हे कृष्ण स्वामी तव पावे आमि
केवल शरण पाओं
करा अनुग्रह मायार निग्रह
तेवेसे प्रभु एरामों

४० हे यदुपति मइ मूढ़-मति
मजानों सेवा तोम्हार
केवल तोम्हार चरण-पङ्कजे
शरण करिलो सार

४१ पुरुष-उत्तम परम-पुरुष
परम-आनन्द स्वामी
तव पाद-पद्म-मकरन्द भावे
शरण पशिलो आमि

४२ प्रभु भगवन्त अनन्त ईश्वर
प्रपन्न-जन-तारण
तुमि प्रियतम परम देवता
जानिया लैलो शरण

१० समुद्र-द्वय

२५ शान्त चिदानन्द शुद्ध अनन्त-महिमान्वित
निर्मल तरङ्ग-भय-हीन
हेनय परमानन्द अमृत-सागरे मजि
आचान्त नकरे बुद्धि-क्षीण

२६ हे हरि सार-शून्य मृगतृष्णार्णव-जले
महा श्रान्त हया मोह पाओँ
स्नान पान आचमन करोहो रमण ताते
करोहो उपङ्गो तल पाओँ

११ बेत्र-प्रहार

२७ हरिर गृहर द्वारे बेत्रर प्रहार योग्य
ब्रह्मा रुद्र आदि देवताक
हेनय द्वारत बेत्र प्रहार पाइबार योग्य
हआ आमि कमन बराक

---

४७ नमो हरि-पद-पङ्कज-युगल
विमल सुख-सागर
अनादि अनन्त सन्त सदाशिव
भगवन्त भव-हर

४८ मोह माया राग मद मत्सर काम
दम्भ द्वेष भाङ्गि भाग
जि गुरुजनत इसव नयाय
प्रणामो ताहान पाव

४९ नमो नित्यानन्द जगत-कारण
वासुदेव भगवन्त
नित्य शुद्ध बुद्ध काम अनिरुद्ध
पुरुष प्रभु अनन्त

५० राम निरञ्जन दानव-गञ्जन
भकत रञ्जन देव
तुमिसि परम गुरु नारायण
तुवा पाव करो सेव

---

१३ भजन

४३ जय जय जय कृष्ण कृपामय
भजिलो तोम्हार पावे
तोम्हार चरण-पङ्कजत मन
मजोक मोर स्वभावे

४४ जय जय राम जगत-कारण
जगत-जीवन स्वामी
परम देवता जानिया तोम्हार
चरण भजिलो आमि

४५ अनादि अनन्त हे भगवन्त
भजा करि प्रणिपात
भकति रसको तेजि महाजने
शरण लवे तोम्हात

१४ नमस्कार

४६ नमो कृष्णदेव पापी बुलि केय
मार मार मोकोमय
पतित-पावन जानिया तोम्हात
आगुमि गैला यिमय

१६ पतित-पावनी

५७ हे हरि मोक दुराचार बुलि
मकरिबा परिहार
तुमि बिने महा-पतित-पावन
कोन देव आछे आर

५८ चरणत धरो कातर कराहो
उद्धार करियो हरि
पतित-पावन हम नारायण
नाहिक तोम्हार सरि

५९ हे हरि तनु मायाये आमार
मारिछे करि कपट
दूर करा माया चापोटे तोम्हार
चरण-छत्र-निकट

६ पतित-पावन राम नारायण
चरणे मोक उद्धारा
आमि पतितक पतित-पावन
नामक परीक्षा करा

६१ दुस्तर सागर दनुजी-जन्म
बुलिया मनक काम
भवतक गजु मन्त्र गुणधार
गुरु कृपा गुण नाम

६२ कोटि कोटि घोर अपराध नित
करो आमि दुराचार
हे हरि मोक दास हम मानि
क्षमियोक कृपामय

४ अनुनय

१५ आतुर-प्रार्थना

५१ तुमि सर्वसाक्षी आत्मा हृषीकेश
आमाहा मोर चितक
शरणागतक मइ आतुरक
उपेक्षा करा किसक

५२ हे कृष्णदेव मइ आतुरक
चरणे करा उद्धार
तिनि तापमय संसार-निकार
सहिते मपारो आर

५३ ए भव-सागरे मजि नारायण
आतुर भैला मापार
दीन अनाथक तुमि कृपामय
चरणे करा उद्धार

५४ हरि ओ हरि करुणा-सागर
करिओ कृपा मामहाक
प्रियतम आत्मा सखा इष्ट देव
मानिया आछो तोम्हाक

५५ हे हरि मइ अनाथक नाथा
करा हरि एकबार
कृपा रम्य लिलित अरुण-चरण
चरण भेल मान्हार

५६ हे भगवन्त भजोहो तोम्हार
अभय पद-कमल
मइ अनाथक राखियो ईश्वर
अरुण चरण-तल

१७ गुचायो कुमति दियोक सुमति

६३ अनादि अनन्त अचिन्त्य ईश्वर
तुमिसे नित्य निर्मल
गुचायो कुमति भजोहो कमले
तोम्हार पद-कमल

६४ बाहिर भितरे तुमि हरि गुरु
आछाहा चैतन्य-रूपे
दियोक सुमति तुमि बिने गति
नाहिक केलो स्वरूपे

१८. निर्मल रति

६५ नमो नमो राम कृष्ण प्रभु देव
तुमि मोर निज गति
दियोक सदय जिमते रहय
तोम्हात निर्मल रति

६६ नमो नमो कृष्ण तोमार भकति
मुकुतिनो करि मले
मोर ताके मन दियोक शरण
अरुण चरण-तले

६७ हे कृष्ण कृपामय प्रभु मोर
करा कृपा एहिमान
तोम्हार चरण रहोक माम्हार
सदाय निमल ज्ञान

६८ जय जगद्बन्धु जगत-कारण
नारायण निराकार
कमले ताम्हार चरण-पङ्कजे
रहोक रति माम्हार

६९ दीन-दयालीन प्रेम दामोदर
दीनक नरियो मोर
हेन कृपा करा तेज पावे मोर
सहज रति मिलोक

७ तोम्हार चरण-सेवार साधिन्ह
नजानो एको उपाय
जिमन गवाल रहिया करणा
परिने हरि गुसाइ

७१ हे प्राण हरि दास्य गुण परि
मागाहो ताम्हार पावे
सार मम मति तोम्हार पावत
रहार हरि स्वभाव

१९ सङ्कटमोचनी

७२ जर ताप पीडा मरण समये
करा हरि कृपा मोक
तब गुण-नाम श्रवण-स्मरण
वचन-गोचर होक

७३ गोपिमीर धन व्रजर जीवन
मोहन राम गोविन्द
परम सादरे शिरे तुलि धरो
तब पद-अरविन्द

२० वयस गोवाइलो

७४ काल-ग्रस्त हुया मैमो अचेतन
वयस गोवाइलो हेले
माधव कृष्णर नामक मलेलो
हरि मकठर मेले

७५ तुमि नित्य निरञ्जन नारायण
आमिमा मद तोमार
तब सेवा-चोर पाया महामाया
मुहिले मन आमार

७६ किनो अपराध करि आछो आमि
माधव बान्धव प्राण
नाम धरि डाको हियात थाकिया
केने मेन्न ममिमान

२१ अमोघ अपराध

७७ कतमो अमोघ अपराध हरि
करिया आछो प्रचुर
कुत्सित थाकिया नेदाहा सुबुद्धि
कृपार हुया ठाकुर

७८ जिहेतु ताम्हार चरण-पङ्कज
नभजिलो नारायण
सिहेतु अनादि अविद्या आम्हार
नरिले मान उछन्न

७९ तुमि मित्र पितृ गुरु इष्टजन
नभजो ताम्हार पाव
एहि दोष मोर यम-दूत धरि
यातना दुख भुञ्जावे

८ तुमि प्रिय आत्मा परम देवता
तोमात भैलो बिमुख
एतेके ताम्हार मायाये आम्हार
निमज्ज संसार-दुख

---

५ आरति

२२ नियन्ता माधव

८१ प्रकृति पुरुष दुइरो नियन्ता माधव
समस्तरे आत्मा हरि परम बान्धव
नमो हरि नारायण राम राम राम
सर्व-धर्म शिरोमणि तुवा गुण-नाम

२३ अमूल्य भकति

८२ हे प्राण-बन्धु कृष्ण कृपार ठाकुरे
अणु एक करा दाया माया होक दूर
जय जय कृपामय देव यदुपति
तोमार चरणे मागो अमूल्य भकति

८३ पतित पड़िया रैलो ए भव-सागरे
पतित-पावन नाम भैल किवा तरे
भकत चरणे मइ पापीक तारियो
पतित-पावन नाम साफल करियो

८४ आतुर भैलोहो हरि विषय-विकसे
करियो उद्धार नाथ चरण-कमले
हे कृष्ण कृष्ण नाथ करा परित्राण
तनु-नाव बुरि याय नाहिके गियान

८५ नाम-धन दिया मोके मिला वनमाली
दास पाया मग्या अधम ठाकुरामि
निज दास करि हरि मोके किना किना
आन धन नलागय नाम-धन बिना

८६ जय जय राम कृष्ण शरण तोम्हार
अपार सागर कृपा करा एकबार
दिया हरिनाम पाय पशिलो शरण
भकतजनर धन तुमि नारायण

२४ कमने भजिबो हरि

८७ कमने भजिबो हरि चरण तोम्हार
दुर्घोर मायाय मन मुहिस आम्हार
हे हरि मोर प्राण जीवन मुरारि
अनाथर नाथ भवतर भयहारी

२५ वेदावादि नामावलि

८८ सत्य समस्तात्म अनन्त अनादि
नित्य निरञ्जन शुद्ध सर्व घट-व्यापी
जय जय जगत जनर जगदीश
अनन्त अव्यय सनातन सर्वाधिप

---

६ उद्‌बोधन

२६ श्रेष्ठ-निरञ्जन-सुन्दर-पावन

८९ कृष्ण एक देव दुख-हारी काल मायाविरो अधिकारी
कृष्ण बिने श्रेष्ठ देव माहि माहि आर
सृष्टि-स्थिति-अन्तकारी देव तान्त बिने आन माहि केव
जानिबा विष्णुसे समस्त जगते सार

९० नमो नमो नित्य निरञ्जन नारायण शिव सनातन
अनादि अनन्त निर्गुण गुण-नियन्ता
परम पुरुष भगवन्त माहि पूर्वापर आदि अन्त
तुमिसे चैतन्य समस्त भव-भावन्ता

९१ ब्रह्मा महादेव लक्ष्मीदेवी काय-वाक्य-मने थिर करि
परम आनन्दे चरण सेवन्त आर
सदा जन्म-जरा-मृत्यु-हीन श्रीमन्त सुन्दर गुणनिधि
विष्णुत बिनाइ कोन देव आछे आर

९२ जार पादोदके देवी गङ्गा जार वाक्ये हुया आछे वेद
परम पवित्रो तस्य आहार नामे
सृष्टि-स्थिति प्रलयर जिटो परम कारण नारायण
हेन ईश्वरक नमस्य कोन कामे

२७ पार-पार

९३ अपार ससार सिन्धु आर विष्णुसे परम पार, जत
पार आछे ताते परम्परमात्मा रूपे
तेस्ते तुमि जाना ब्रह्मा-पार पर-पार-भूत जत पार
तासम्बार पार विष्णुसे पार स्वरूपे

२८ अभ्यथना

९४ वसुदेव निगदति हासि साक्षाते विदित भैला आसि
तुमिसि पुरुष प्रकृतिसो करि पर
समस्ते जीवर बुद्धि-साक्षी केवल-आनन्द अनुभव
स्वरूपे सुखर सागर देव ईश्वर

९५ हे कृष्ण यत जीव नित्य तिनि तापे हुया सन्तापित
दुर्घोर संसार-तापत परि आछय
तजु पद दण्ड-छत्र प्राय अमृत वरिषे सर्वदाय
तार छाया विने नेदेखो आर आश्रय

९६ बुलि निगदति यदुपति राम राम राम राम राम
किनो कृपा मोक करिलाहा नारायण
देवरो दुर्लभ आतिशय राम राम राम राम राम
गृहते थाकिया देखिलो तजु चरण

२९ चेतना

९७ ब्रह्मा आदि करि जीव यत राम राम राम राम राम
माया-धाम्या माजे आछय भुमटि थाइ
तुमिसे चैतन्य सनातन राम राम राम राम राम
आमि अचेतन नियोक माथ जगाइ

९८ शुद्र सुखे बहु आशा करि भव-कूपे जीव आछे परि
काल-सर्पे यथि हराइल चेतन तार
मोक्ष-रूप तजु वाक्यामृत कृपाये सिञ्चियया प्रति नित
दायामय कृष्ण करियो ताक उद्धार

३० गजेन्द्र-मोक्ष

११ सरोवरे ग्राहे धरि आछे गजेन्द्रे पीड़ाय पाया पाछे
आकाशे गरुड़-कान्धे चक्र धरि हरि
देखि सुवर्णर पद्म धरि बोले मुखे आर्तनाद करि
नमो भगवन्त गुरु सेयो दास करि

३१ कृष्ण-पञ्जर

१ हे कृष्ण तव पाद-पद्म-पञ्जर भितरे मोर मन
राजहंस पक्षि थाकोक प्रभु सर्वथा
प्राण प्रयाणर समयत कफ वात पित्त आदि यत
कण्ठ-निरोधने तोमार स्मरण कथा

३२ वानप्रस्थाश्रम

१ १ हे कृष्ण पुत्र-पत्नी-सङ्ग तेजि तव पद चिन्ति नित
गर्व-शून्य सन्तसवर आश्रमे थाकिबो
तासम्बार मुख-पद्मे धाम हुइबे तव कथामृत-नदी
ताते मग्न हुया देहार हाव एड़ाइबो

३३ खेद

१ २ आपुन नामक बहुतर करि निज सर्व शक्ति दिया
कालर नियम निविहिला स्मरणत
एतादृशी तव कृपा हरि मोहोर दुर्दैव देखा किनो
अनुराग प्रभु नभैल तव नामत

१ ३ कत महापुण्ये पुण्य करि अपवर्ग-योग्य नर-तनु
पाया पृथिवीत विषयत मजि रैल
हटो खेद हरि-सेवा तेजि आपुनाक आत्मघात करि
भिलो महापापी आपुनि वञ्चित भैल

३४ निजगृह

१०४ चारियो वेदर चारि अक्षर सार काढ़ि आनि ब्रह्मादेवे
एकत्र करिया दैल नारायण-वाणी
सेहि नारायण-नाम गाथा शुद्ध करो आमि चित्त-काया
हरि-सन्तोषर कारण नाम मभानि

१०५ कृष्ण-यशे चित्त-शौच हुया समस्ते क्लेशक तरि पुनु
कृष्ण-वासे कृष्ण चरण-मूल सेवय
सकले सम्पूर्ण निज-गृह पथिकसकले पाया पुनु
दुख एड़ाइ जेन सिटो गृह मझारय

३५ दासदासानुदास

१०६ नोहो आमा आमि चारि जाति चारिओ आश्रमी नोहो आति
नोहो धर्मशील दान-व्रत-तीर्थ-गामी
किन्तु पूर्णानन्द-समुद्रर गोपी भर्ता-पद-कमलर
दासर दास तान दास भैलो आमि

---

७ काकूति

३६ सत्ये सत्ये पशिलो शरण

१ ७ यादव यदु-नन्दन माधव मधु-सूदन
तुमि नित्य निरञ्जन नारायण
तोम्हात लैलो शरण

१ ८ दयार करुणामय हरि कमलापति
मोरे नछाड़िबा नारायण
अरुण चरण-तले हरि कमलापति
सत्ये सत्ये पशिलो शरण

१ ९ हरि चरणत शरण लैलो । ए हरि नारायण
मानवी जनम साफल कैलो । ए हरि नारायण

३७ भुवन-मोहन

११ मदन-मोहन राम भजिलो तोमार पाव
महा महा पापी आर नाम जपि
उत्तम पदक पाय

१११ राम कृष्ण नारायण निरञ्जन निराकार
निर्विकार निरामय हरि
चिदानन्द सदानन्द पुरुष परमानन्द
मजो तुवा चरणत धरि
हरि राम बिन प्रभु अनन्त वैस्यारि

३८. भकति-प्रदीप चार्मो

११२ किमते भकति करिबो तोमार हरि ए
मइ मूढ़-मति नजानो सार उपाय। राम राम
महाबलवन्त दुर्वासना मोर हरि ए
आमार मनक तेजिया दूर नजाय। राम राम

११३ तोमार मायाये मन मुहि आछे हरि ए
अज्ञान-अन्धारे परिया पार नपार्मो। राम राम
अभय चरणे शरण पशिलो हरि ए
तुवा गुण-नाम भकति-प्रदीप चार्मो। राम राम

११४ भकति मिनति प्रणति नजानो हरि ए
मोत परे ज्ञान-शून्य हीन-मति नाइ। राम राम
तुमि प्रभु कृपा रसेर सागर हरि ए
दियो मोक तुवा पद-छाया-तले ठाइ। राम राम

३९. नजानो एत दिन

११५ हरि ए करुणा-सिन्धु जीवन-बन्धु
गति मति तुमि नारायण
तुवा गुण-नाम भकतर महाधन

११६ पतित बुलिया मोक हरि हरि औ राम
तेजिले नपारा नारायण
परम करुणा-गुणे हरि हरि औ राम
नाम धरिछा पतित-पावन

११७ मोक कृपा करा हरि ए
दान्ते धरो तृण माथे धरो तृण
तुमि कृपामयक नजानो एत दिन
मोक कृपा करा हरि ए

११८ पतित-पावन बलि नारायण ए
परम पतिते काकय आतुर हुया
तज वेद-वाणी आमि आछो शुनि ए
महा महापापी तरे तयु नाम लैया

११९ तुवा गुण-नाम अमृत-आशाय ए
तोमार चरणे बिका गैलो मूढमति
चरणत धरो कातर करो ए
मइ अनाथक नछाड़िया यदुपति

१२ तोमार सेवक भैलो नारायण ए
निश्चय तोमार दिवाक लागे प्रसाद
निज भृत्य करि लैले गोपीनाथ ए
तयु कृपामय मिथ्य कोन प्रमाद

१२१ हे मायाधीश देव दामोदर ए
तोमार चरण मागोहो काकूति-वाणी
माक निज दास करि लैले हरि ए
कहिया कृपाल तोम्हार कि हय हानि

१ परम कृपाल हुया यदुपति ए
बिना अपराध माक भृत्य परिहरा
तोम्हना प्रसिद्ध अनाथनो हरि ए
जिना नाम मत नाक मोर शुनि धरा

४१ स्वातन्त्र्यापराध

१२९ आमि अत जीव तोमार पालन
हरि हरि हरि हरि ए
तुमिसे पालिया फुरा हुया अन्तर्यामी
आवे जेवे निज मुख्य बुद्धि पाला
हरि हरि हरि हरि ए
तेवसे कृपाल कृतघ्न हुयाँ आमि

१३० तुमि आकु पाला सिअोजन आमि
हरि हरि हरि हरि ए
संसार-निकार भुञ्जिया फुरो बहुत
तोमार अधीन हुया कोने आमि
हरि हरि हरि हरि ए
भैलोहो स्वतन्त्र हन्ते किनो अद्भुत

१३१ तोमाक परम ईश्वर ममानि
हरि हरि हरि हरि ए
महा महङ्कारे द्रोह आचरिलो आमि
आवे तव पदे शरण पशिलो
हरि हरि हरि हरि ए
मह द्रोहियार दोष क्षमा करा स्वामी

१३२ दास हुया तव सेवा नकरिलो
हरि हरि हरि हरि ए
हन्ते घोर अपराधर चिकित्सा नाइ
तुमि पुन प्रभु सहज-कृपाल
हरि हरि हरि हरि ए
दारुण पशिला क्षमिबे प्रभु गुसाइ

---

४४ करुणासागर+करुणासिन्धु

१३९ करुणामय करुणासागर कृपार करुणासिन्धु
तोमार कृपार आमि मोहो पात्र
तुमि पुनु दीनबन्धु

१४० मोर प्राण-बन्धु गोविन्द सेवक करिया लैयो
आन एको काम नमागो तोमार
भृत्यर सङ्गत थैयो

१४१ राम कृष्ण हरि गोविन्द दीन-दयाशील स्वामि
तोमार चरणे सहृज बासना
शरण मागोहो आमि

१४२ राम कृष्ण हरि गोविन्द सेवक भैलो तोमारे
अभय चरणे शरण पशिलो
चुरियो माया हामारे

१४३ गोविन्द गोपाल गोपीनाथ कृपा नकारिबा मोरे
अपार असार भार माहि पार
मजिलो ए दुख मोरे

४५ मने लैलो सार बाछि

१४४ राम राघव रघुपति ए
तुमि बेव अगतिर गति ना हे
तुवा पद-कमलर मकरन्द-रसे रति
करिया थाकोक मोर मति ना हे

१४५ जय जय यदुपति ए
तुवा पाबं पशिलो शरण ना ए
भाग कथा शुनि आछि मने लैलो सार बाछि
तुवा नाम पतितपावन ना ए

९ दैन्य

४८. कि काम करिलो आमि

१४९ ए हरि हरि हरि हरि
कि काम करिलो आमि
साधु-सङ्ग लैया तोमाक नभजि
भैलो किनो अधोगामी

१५० निज वास हुया सेवाक तेजिलो
एइ दोषे घोर आपदे मजिलो
तुमिसि सुहृद आत्मा प्रियतम
तोमाक नभजो कि मइ अधम

१५१ तुमि निज पितृ गुरु इष्ट मोर
मइ मन्दमति भैलो सेवा-चोर
अधमक तारे तोमार भकति
तथापि तोमाक भजो कुमति

१५२ दुष्ट दव बुलि तोमाक मपरो
निरन्तर भुञ्जिया संसारत मरा
तुमिसे करमे करुणा-सागर
तोमाक भजो कि मइ पामर

१५३ भाव कृपामय दियोक दारुण
मोर मतिगण तोमार चरण
दुवार ईश्वर मछाड़िवा मार
मार मन मजि तोमात रहोक

५१. मोर प्रभु नारायण ए

१५७ तुमि नित्य शुद्ध बुद्ध निर्मल निर्गुण देव
मोर प्रभु नारायण ए
स्वरूप आनन्दे सदा सुखी
हरि हरि तुमि निजानन्दे सदा सुखी
आमि मूढ़मति घोर अविद्या-सागरे मजि
मोर प्रभु नारायण ए
तोमाक नजानि भैलो दुखी
हरि हरि स्वरूप नजानि भैलो दुखी हरि ए

१५८ अखण्डित सदा शुद्ध चैतन्य-शक्तिर बले
मोर प्रभु नारायण ए
तुमि दूर करि आछा माया
हरि हरि तोमार निकटे नाहि माया
तोमाक नमजो पदे मायाये मुहिले मोक
मोर प्रभु नारायण ए
आवे कृपामय करा दाया
हरि हरि मायाक निवारि करा दाया हरि ए

१५ हे कृष्ण तुमि निज आत्मा प्रियतम गुरु
मोर प्रभु नारायण ए
परम ईश्वर भयहारी
हरि हरि तुमि इष्ट देव भयहारी
एतके जानिया तव चरणे शरण लैलो
मोर प्रभु नारायण ए
नछाड़िबा इवार मुरारि
हरि हरि लैयो मोक मायाक निवारि हरि ए

५२ दीनबन्धु दामोदर ए

१६० देवकी-नन्दन देव देवकी-नन्दन देव
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि चरणे उद्धार करा मोक
प्राण-बन्धु इवार मरिबा हरि मोक
भकति मिनति स्तुति प्रणति नजानो मइ
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि भाव मोर केन गति होक
प्राण-बन्धु मोर मन तोमात रहोक हरि ए

१६१ मनुष्य-योनिर कर्मे निष्पाप योमित फुरि
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि बार बारे भुञ्जिलो अपार
दीनबन्धु कतबा भुञ्जिलो नाहि पार
इबेलि तोम्हार दुइ चरण धारण लैलो
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि नकरिबा मोक परिहार
प्राण-बन्धु चरणत राखियो इवार हरि ए

१६२ पुनु पुन मर-तनु लभिया तोमाक तजि
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि संसारे भ्रमिलो असंख्यात
दीनबन्धु कतबा करिलो मायाजात
इबलि करुणामय तोमार किङ्कर भैलो
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि रति मोर रहोक तोमात
प्राण-बन्धु चरणत करा प्रणिपात हरि ए

---

१० कारुण्य

५३ भाल भारसा पाया आछि

१६३ रामर नामेते अमिया झुरे
भक्त-जन-मनोरथ पूरे

१६४ भाल भारसा पाया आछि हरि करुणामय
राम कृष्ण कृपार ठाकुर
राम बुलिले पापी तरे हरि करुणामय
सकल आपद होवे दूर

१६५ भक्तसबे राम-नाम गाबे
काल-माया डरे तरतराबे

५४ दुगुटि अक्षर=विज्ञानप्रदीप+अनपायिनीभक्ति

१६६ दुगुटि अक्षर राम-नाम
श्रीराम-नाम अमिया-माधुरि झुरे
अति सकामल परम मङ्गल
सबे मनोरथ पूरे

१६७ जय जय नित्य निरञ्जन
नित्य निरञ्जन देव शिव सनातन
परम अभय तोमार चरण
ताप-तिनि-विनाशन

१६८ हे कृष्ण दीन-दयाशील
दीन-दयाशील दाया नछाड़िबा मोक
अज्ञान-तिमिर नाशिया
विज्ञान प्रदीप प्रभु दियोक

१६९ हे प्राण प्रभु कृष्णदेव
प्रभु कृष्णदेव दीनक करियो दाया
परम तापिते मागोंहो तोमार
शीतल चरण-छाया

१७० प्राण प्रियतम वसुदेव
दियो मोक एहि दान
करायो तोम्हार चरण-सुधार
सन्तोषे अमिया-पान

१७१ नमो राम कृष्ण सदाशिव
कृष्ण सदाशिव तुमि जगतर पति
अपाय रहित मागोंहो भकति
चरणे करि प्रणति

५६ करियो कृपा जेन उचित हय

१७८ करुणामय राम करुणामय
करियो कृपा जेन उचित हय
तुमिसे राम कृपा-रसेर निधि
तोम्हार कृपा बिने नाहिके सिद्धि

१७९ सहजे तुमि राम करुणा-सिन्धु
तोमाठ बिने आन नाहिके बन्धु
तोमार कृपा-बले आमार गति
कहय माधव मूरुख-मति

---

२. उपदेश

११ रहस्य

५७ एकान्त-भक्ति

१८० एकान्त भक्तसबै निर्गुण कृष्णर गुण
गाबै सदा बसिया जमात
बैकुण्ठ परिहरि योगीरो हृदय परि
पाका हरि साक्षातै जमात

१८१ सम्यक्त ईश्वर हरि भिमते पूजिबा ताहु
व्यापकत क्रिया विसर्जन
एतावन्त मूर्तिपूज्य केममने चिन्तिवाहा
राम बसि धढ बरा मन

१८२ धर्मत विश्वास आर हियात पावन्तो हरि
आविनाय दूर होन्त तार
दूरतो बिदूर होन्त तार
महद्वार पावन्तमी साक्षाते कृष्णक पाव
श्रवण कीर्तन धर्म सार

५८ भक्ति-गौरव

१८३ जिटोजने सुद्धभावे हरित शरण लैया
हरिक सुहृद बुझि थाक्छे
हरिर प्रसादे सिटो विभ्निर मुक्तत भदि
विया हरि-गुण गाया नाचे

१८४ जिटोजने कृष्ण-कथा विचारे समये मने
धैर्य धरि क्षणेक पाकय
व्रत तीर्थ-स्नान दान देव-पितृ-यज्ञ याग
योगादिरो फलक पावय

१८५ चार पुत्रसवे ऐत हरित शरण लैया
हरि-गुण गावे शुद्धभावे
दधि दुग्ध घृत मधु नगीर अलक पिया
पितृगणे तृपितिक पावे

५९ नामवाद

१८६ सेहिसे चसुर जिटो पुण्यर निदान मूत
नारायण-नामक उच्चरे
सम्सतुर सिचि भाति पापर निवान मूत
नामे अर्थवाद जिटो करे

६० महेश-वृष्टान्त

१८७ महेशे बोलन्त मोर रकारादि नाम शुनि
परम प्रसन्न होवे मन
शुनियो पार्वती मइ मनत शङ्कुर्सी रज्जै
राम बुम्बिबेक इटो धन

६१ पावन-मूर्त्ति

१८८ विष्णु-पादोदक गङ्गा महेश सहिते इटो
जगतके पवित्र करय
हेन कृष्ण बिने कोन भगवन्त हेन इटो
सवदर स्वरूप आछय

१८९ अपवित्र जिटो मात्र पवित्र होवेवा यदि
समस्ते अवस्था आछे पाया
कमललोचन जिटो समरे तारसे शुद्ध
बाहिरे भितरे होवे काया

६२ शारद्वत्

१९ कण-अपे भक्तर हियात प्रवेशि हरि
दुर्वासना हर समस्तय
जसर अतेक मल अहेन शरत-काले
स्वभावते निर्मल करय

६३ हेन महेश्वर विष्णु

१९१ ब्रह्मा आदि देवगणे भिक्षम सम्पत्ति मने
सम्मीक सेवन्त तप करि
सम्मीओ सेवन्त याक हेन महेश्वर विष्णु
आन कोन देव ताहू सरि

६४ जडराशि प्रवर्त्तक

१९२ जिहेतु चैतन्य-पूर्ण परमात्मा-रूपे हरि
हृदयत थाकन्त प्रकाशि
तातेसे इन्द्रियगण भूत प्राण बुद्धि मन
प्रवर्ते जतेक जड़राशि

९५ निगम-तत्त्व-सार

१९३ राम-कृष्ण-हरि-नाम सर्व-धर्म-अनुपाम
सकल निगम-तत्त्व-सार
जात परे धर्म नाहि आर
हेन नाम मुसुमरि कमन भारसा करि
रैया आछा भव तरिबार

१९४ सकल निगम सवा तार अविनाशी फल
कृष्ण-नाम चैतन्य-स्वरूप
सुमधुर सुमङ्गल मढाये हेलाये लैया
नर मात्र तरे भव-कूप

९६ निष्कामो वा सकामो वा

१९५ कृष्णर नामक सदा कीर्तन करय जिटो
मनै दृढ करिया निश्चय
निष्काम होक वा यदि सकाम होवय ताक
कदाचितो कमि भवाभय

९७ निज-यश प्रिय प्रभु

१९६ चाण्डाल पर्यन्त करि जगतर उपकारी
नाहि नाम-गुण बिने आन
सेहिसे कारणे हरि निज-यश-प्रिय भैल
भगवन्त भकतर प्राण

९८ नाम सिंह

१९७ पुण्य-अरण्यर माजे माधवर नाम-सिंह
प्रकाश करय आति बड़े
जार ध्वनि शुनि भये महापाप-हस्तीचय
पलाय भाति त्रासत सबे

---

१२ साधना

६९ आशा-परित्याग

१९८ दुर्लभ मनुष्य-तनु लभिया पशुर योग्य
विषयर आशा परिहरा
सत्सर सङ्गत बसि सुखे हरि-गुण गाआ
सन्तोष-अमृत पान करा

१९९ विषय-सम्बन्ध-सुख समस्तै योनिते पाय
हरि-सेवा एको आने नाइ
हरिर सेवार योग्य केवल मनुष्य-तनु
जानि करा हरि-गुण गाइ

२०० शुभ-मति मनुष्यर हरि-कीर्तनत पर
नाहिके रहस्य-बित्त आर
आन आशा परिहरि माधवक मने धरि
हरिर कीर्तन करा सार

२०१ सहिसे समस्ते शास्त्र पढ़िल शुनिले सिधि
अनुष्ठान समस्ते करिल
निराशा ईश्वर कृष्ण ताहाङ्क सन्मुख भैल
आशाक जिजने पिठि दिल

७० मुक्त-साधना

२०२ हरि-नाम-कीर्तनत नाहि देश काल पात्र
नियम संयम एको विधि
हरित शरण लैया केवल हरिर नाम
कीर्तन करन्ते होव सिद्धि

७१ मृत्युभय

२०३ मृत्युर मुखत परि आछे जितो सितो मरे
हरि-गुण-कीर्तन नकरे
मृत्यु तरिवार आना नाहिके उपाय आन
हरि-नाम-कीर्तनत परे

२०४ मृत्यु तरिवार यत आछय उपाय आन
विधिनि-भूषित निरन्तरे
विधिनि रहित यत माधवर गुण-कर्म
कीर्तन करन्ते सुखे तरे

७२ सम्यगमा' शुणुत

२ ५ शुना समासवचय नेरिवा शास्त्रर मय
हरि-गुण भागवत-सार
साधु-सङ्ग अनुसरा श्रवण-कीर्तन करा
परिहरा पापपङ्क-आधार

७३ ग्राम्यकथा वि० हरिकथा

२ ६ ग्राम्य-कथा-विनाशन उत्तम श्लोकर गुण
प्रश्नय साधुर सङ्गत
ताक अनुदिन जितो सेवे तार रती मति
होवे वासुदव-परगत

२ ७ संहिस विमर मार्ग दुर्दिन धुम्मिया मानि
मेघाच्छन्न मोहय दुर्दिन
हरि-कथा-अमृतर सम्यक-आस्वाद रसे
जितोजन होवय विहीन

७४ वैराग्य भाग्य

२०८ वैराग्यत परे भाग्य नाहि, प्रबोधत परे
सुख आर नाहि पुरुषर
हरि बिने परित्राण-कर्ता आर नाहि जाना
रिपु नाहि ससारत पर

७५ लक्ष्मीनिरपेक्ष सेवानन्द

२०९ लक्ष्मीपति भगवन्त याहार प्रसन्न भैला
ताहार दुर्लभ किछु नाइ
नारायण-पर भैले तथापि किञ्चितो आन
नकाङ्क्षय सेवा-सुख पाइ

७६ परमाधिकार

२१० कृष्णर हृदय याक लक्ष्मीर निवास-धाम
मुख नयनर पान-पात्र
दिगपाल समस्तर आश्रय कृष्णर बाहु
भकतर पाद-पद्म भाग

७७ भक्तता

२११ परम ईश्वर यब कृष्णक नपावे लाग
तप जप याग योग याने
एकान्त भकतर पद रेणु शुद्ध-चित्ते माथे
अभिषेक नकरय माने

७८ साक्षात्कार

२१२ आत्मा-ईश्वरक भाग प्रत्येके सतते पाइ
नपाइ यामा तातु अविद्यात
अविद्या भगिले आप कृष्णक पावय येन
कण्ठ-लग्न वस्तुर साक्षात

---

१३ लोक-प्रवाह

७९ शब्दशक्ति-कुण्ठन

२१३ नारायण हेन छोटो शब्द आछय मुखे
वशवर्ती वचन आश्रय
तथापि अद्भुत किनो घोर नरकस्थ भजि
मन्द-मति मनुष्य मरय

८० तर्कशास्त्र-महाव्याघ्री

२१४ तर्कशास्त्र-महाव्याघ्री साहाम निपुण पति
तार शिष्य मेष पुत्र-प्राय
संसार वनत पशि पति-पुत्र समन्विते
उपनिषद्-क्षेत्रु घरि खाय

२१५ सर्व-श्रुति-शिरोरत्न भागवत-वन माझे
हरि-नाम-सिंह प्रकाशय
तार महाध्वनि शुनि मित्र परिवार समे
तर्कव्याघ्री पलाय हुया भय

८१ जडपूजाधमाधमा

२१६ माया आदि करि जत समस्ते जगते जड़
कृष्णेसे चैतन्य आत्मा शुद्ध
चैतन्य कृष्णक एड़ि जड़क भजिया नरे
किनो लोक अधम मुगुध

८२ हेन नाम एतिखणे हेला

२१७ तप जप तीर्थ व्रत याग योग यज्ञ दान
काको नुसुमरे मृत्यु-बेला
मरणागमनक बेरि वासे सबे राम बोला
हेन नाम एतिखणे हेला

२१८ परलोक-समयर बान्धव हरिर नाम
सब एड़ि जिह्वा सुमरे
एतिखणे कि कारणे हेनय हरिर नाम
मत्त-मति नरे नुसुमर

८३ नामौषध

२१९ दुर्घोर संसार बटो व्याधिर औषध महा
तजि हरि-नामन सम्प्रति
कमन उपाये आन पण्डितसकले भावे
अभिनव आपुन मुकुति

८४ 'कोवा कोवा'

२२० गोविन्दक नगायिया कान काल कदाचित
भगी हया आछे कोनजन
हेन जिव्हा मन धरि भाइरे बोलय सेन
'कावा कावा' कुवायस-वचन

८५ धार्म्मिक गुरु

२२१ शङ्करेसे गुरुमत ईश्वर-भक्तिर तत्त्व
प्रचारिला शास्त्र-सार आनि
ताहाङ्क नमानि मूढे धीविकार अर्थे फुरे
आपुनार महत्त्व बखानि

२२२ शङ्करे संशय छेदि शास्त्रर तत्त्वक भेदि
प्रचारिला कृष्णर भकति
ताङ्क एरि कि कारणे आनक बोलय गुरु
किनो लोक महामूढ-मति

२२३ नजाने शास्त्रर मर्म येन आसे ताके कय
छेदिबाक नपारे संशय
गुरु बोलाइ तथापितो फुरय लोकर माजे
मान्य-सत्कार लुटि रय

२२४ हरि-नाम भजन करि वेद-धर्म परिहरि
फुरे माति आपण्डसकल
इह-परलोके भ्रष्ट हुया पट धुपि भाज
फुरे माति परम निष्फल

१४ भक्ति

८९ नामापराध विनाशन

२२८ राम-कृष्ण-नाम धर्म अनुपाम
सदाय मिटो सुमरे
यत महापाप नाम-अपराध
सबे मपिमूर करे

९० केवल भक्ति

२२९ मोर भक्ति-युक्त योगीरे जानिबा
मोसेसे भित्त आहार
ज्ञान कर्म बिने केवल भक्तित
पावय संसार-पार

२३ केवल भकति पुरुषक तारे
सहाय काको नचाबे
ज्ञाने कर्मे ताबे तारिते नपारे
भकति नपाबे जाबे

१५. बुद्धियोग

१५ मनोमय

२४७ महन्तर सङ्गे हरि-कथा-रसे
मनक जिनियो भाइ
मायाक तरिबा हरिक पाइबार
उपाय आवर नाइ

२४८ महन्तर सङ्गे सदाय शुनत
गजारिबा राम-बाणी
तेबेसे चञ्चल दुराचार मम
हैबे आसि एकाजानि

२४९ आन यत धर्म हरिर नामर
रेणुको नोहे समान
हेन हरि-नाम अमृत-सागरे
सन्तोषे करियो पान

२५ हरिक आश्रय जानिबा निश्चय
सुखर मूल कारण
हरित बिमुख दुखर कारण
जानिबा निष्ट वचन

२५१ विषिर किङ्कर यतेक साधन
ताक पाश करि थैयो
विषिर ईश्वर हरि-नाम-गुण
ताहाते शरण लैयो

९२ वासुदेवाय कृष्णाय

२३६ वासुदेव वासुदेव वासदेव
बुल्या जिटो सुमरे
सिटो पुस्पर जाना यमराजा
लिखन मार्जन करे

२३७ दिव्य सहस्रेक नाम खिमिबार
पढ़ि पाबे व्रत फल
एकबार कृष्ण-नाम उच्चरिले
पाबय ताक सकल

९३ बाघजालि

२३८ यम काल माया मृत्युबे बेढ़िया
आछे बाघजालि करि
हेनय जीबक कोने तारिबेक
बिने कृपामय हरि

२३९ पाप-सागरत तल मियाइलेक
बले कलि पुराबार
राम-नाम बिने पाप एराइबार
उपाय नाहिके आर

२४ हरि-गुण-नाम-आनन्द-सागरे
मजायो मन निपुण
सुखे संसारर ताप एराइबाहा
नछारिबा हरि-गुण

१५. बुद्धियोग

९५ समोजय

२४७ महन्तर सङ्गे हरि-कथा रसे
मनक जिनियो भाइ
मायाक तरिया हरिक पाइवार
उपाय आवर नाइ

२४८ महन्तर सङ्गे सदाय मुखत
मछारिबा राम-बाणी
तेबेसे चञ्चल दुराचार मन
हैबे आसि एकाबानि

२४९ आन जत धर्म हरिर नामर
रेणुको नोहे समान
हेन हरि-नाम अमृत-सागरे
सन्तोषे करियो पान

२५ हरिक आश्रय जानिबा निश्चय
सुखर मूल कारण
हरित विमुख दुखर कारण
जानिबा निष्ट वचन

२५१ विधिर किङ्कर जतेक साधन
ताक पाश करि थैयो
विधिर ईश्वर हरि-नाम-गुण
ताहाते धारण हैयो

१७ वज्र-पञ्जर

२५७ हृदय-सम्भव कृष्ण चरणक
प्रेम-भरी दिया छान्दा
परम सुदृढ राम-कृष्ण-नाम
कवच गलत बान्धा

२५८ राम-कृष्ण-नाम अभेद कवच
सदाये थिटो चिन्मय
तिनि गुण-वृत्ति अस्त्र प्रहारे
ताक भार निविम्मय

२५९ हिरण्यकशिपु प्रह्लाद पुत्रक
नानाव दुर्गति दिल
हरिनाम-महाकवच प्रभावे
तार लोम नहरिल

२६ एकान्त शरणे थिटो नाम सबे
फुरा हरि ताकु राखि
इहात यद्यपि सम्भात नआमा
सैयो प्रह्लादत साक्षी

२६१ जाने वा अजाने माधवर नाम
जिअने फुरे सुमरि
ताक मोर लक्षि हाते अस्त्र तुलि
राखिया फुरन्त हरि

२६२ ग्राह-ग्रस्त हुया गजेन्द्र शरण
सैला नाहि हरि बुझि
ताहाकु तेजने राखिबन्त आथि
हाते हरि चक्र तुलि

१६ मूढजन-स्वभाव

९९ भक्त-निन्दा

२६८ महन्तसवर केवले जीवन
हरिर नाम मङ्गल
हेन हरि-नाम मलैया कलित
करिले जनम विफल

२६९ हरिर परम प्रियतम नाइ
निज भकतत परे
हेन भकतक जिजने निन्दय
हरिकेसे निन्दा करे

२७ हरि भकतर घाय नधरय
यम काल भार करि
इसब कथाक जिटो नमानय
तिमितो करिमा मरी

२७१ हरि भकतर छिद्रक मधरे
दुष्ट-शिरोमणि कलि
हुन भकतर किञ्चितो छिद्रक
सज्जने पाके मावलि

२७८ भारत भूमित जनम लभिया
नभजे हरि चरणे
सिटो ज्ञानशून्य पशुतो अधम
जनम लभिले केने

२७९ आपुन जनम भारत भूमित
लभिलेक सिटो नर
हरिक नभजि करिले विफल
सिटो शोच्य समस्तर

२८० हरिर चरण नभजि केवले
पोषे पुत्र भार्या मात्र
यमराजा बुलिलन्त सेहिजम
यम-यातनार पात्र

२८१ हरिर चरण निश्चिन्ते चिन्तय
विषयक दिने राति
शास्त्रर सम्मते जाना सेहिजन
भैल निज आत्मघाती

---

१०४ हरि-गुरु-पद-सेवा

२८४ हरि-गुरु-पद-सेवा-खाण्डा काटि धरा
मन-बैरी। काटि सुखे भव-नदी तरा
सन्त-उपदेश हरि चरणे भजियो
हरि-नाम निरमल आनन्दे भजियो

२८५ माधवर राङ्गा दुइ चरणे भरिमा
राम-नाम रस पिया आञ्जलि भरिमा
गुणमय साध्य-साधनक परिहरि
कृष्ण-कथा रस पियो कर्णाञ्जलि भरि

२८६ कृष्ण-पद-सेवा-सुख परम दुर्लभ
हरि-सेवा भैले आन सकले सुलभ
कृष्ण-पाद-पद्म भैल याहार आश्रम
याहारेसे गुचय निःशेष दुख-श्रम

२८७ यत जीव रासि फुरे कुशलक चाइ
हरि-नाम बिने तार महाकाम नाइ
हरि-कीर्तनत यार मिल्लिक सन्तोष
सर्वसुख मागी होवे हर कलि-दोष

१०७. महोदय

२९३ राम-कृष्ण-नाम पार मुसत पाक्य
ताहारेसे जानिया मिलिस महोदय
राम-कृष्ण-कीर्तन स्वभाव भैला पार
सियो भैला हरिर हरियो भैला तार

१०८ आशा नामे नदी माझे

२९४ हरि-नाम एरि मन कि काम करस
माया-मोह-जाले परि मिछाते मरस
हरि-नाम धर मन हरि-नाम धर
आशा नामे नदी माझे मिछात ममर

२९५ राम-नाम लैयो मन राम-नाम लैयो
मिछा आशा लाभ-काम पाश करि थैयो
राम-नाम लैयो मन तेजा आशा आन
भकतर सङ्गे पाला नामर धेयान

१०९ विषयर आशा भङ्गे

२९६ विषयर आशा भङ्गे भकतर हृदय
दंशय विषय-रस विष्ठार सदृश
विषयर सुख जत सकलो असार
जानिया भकत ताक करे परिहार

१८ गीता निर्णय

११२ कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

१ १ हे कृष्ण हे वासुदेव देवकी-नन्दन हरि
नमो नन्द-गोपर कुमार
कृपामय श्रीगोविन्द तव पद-अरविन्द
करो मई लक्ष नमस्कार

२ २ पद्म सम नाभि यार प्रणामोहो बारम्बार
नमो दिव्य-पद्म-माला-धारी
नमो पद्म-सम-नेत्र पद यार शतपत्र
नमो भक्तर भय-हारी

३ ३ वसुदेव-सुत कृष्ण तुमि भक्तर इष्ट
कंस चाणूरादि-विमर्दन
देवकी-हृदयानन्द जगतर गुरु कृष्ण
तव पावे करोहो वन्दन

११३ गीताशास्त्र

२ ४ सकले उपनिषद धेनु दोग्धा भैला ताक नन्द-सुत
तार वत्स भैला कुन्ती-सुत धनञ्जय
दुग्ध भैल महा गीतामृत कृष्णर करणे दिया चित
मयद्धिसकले सन्तोषे पान करय

३०५ एतेकानि मात्र शास्त्र निष्ठ देवकी-नन्दने कैला वाक
देवो एके मात्र देवकी-देवीर सुत
देवकी-पुत्रर पद-सेवा कर्मो एके एहिमाने मात्र
मन्त्रो एके तान नाम-मात्र अदभुत

११४ शोक-मोह-महापङ्क माजे

३०६ शोक-मोह-महापङ्क माजे अर्जुन मगन भैला देखि
परम ईश्वर देवता नन्द-नन्दन
कृपाये ईश्वर-तत्त्व कहि उद्धारिला निज भकतक
हेन ईश्वरर चरणे लैलो शरण

३०७ हे कृष्ण धनञ्जय-सखा वृष्णि-कुल-श्रेष्ठ दुष्ट-राजा
बधर वहन अनन्त-वीर्य गोविन्द
गो विप्र-देव-दुख-हारी योगश्वर समस्तर गुरु
नमो भगवन्त तयु पद-अरविन्द

११५ आत्मोद्धार

३०८ आपुनि आपुन बन्धु आपुनि आपुन शत्रु
आपुनि आपुन राखे मार
हरिक नभजि नर आपुनि हावय नष्ट
हरि भजि आपुनाक तारे

११६ त्रिविध नरकद्वार

२ ९ अनेक अनर्थ आछे संसारत
ताते तिनि विष सार
काम क्रोध लोभ आपुन-नाशन
जानि करा परिहार

२१ आत्मा-नाश-हेतु काम क्रोध लोभ
नरकर तिनि द्वार
जानि आक तेजि केवले कृष्णर
भकतिक करा सार

२११ काम क्रोध लोभ तेजि जिटो जने
भजय कृष्णर पाये
कृष्णर कृपात होवय कृतार्थ
सुखे मुकुतिक पाये

११७ त्रिगुण-निस्तार

२१२ कृष्णकेसे मात्र भजे जिटोजने
अव्यभिचारी भकति
तिनिगुण अतिक्रमि ब्रह्म-रूप
पावे सिटो महामति

२१३ तिनि-गुणमय यत ज्ञान कर्म
केवल बन्ध-कारण
जानि ताक तेजि एकान्त भकति
भजियो कृष्ण-चरण

१४ रजागुण तमागुण यत वृत्ति
केवल आसुरी भाव
शुध सत्त्व वृत्ति दैवर सम्पत्ति
तैया भजा कृष्ण-पाव

११८. अपि चेत सुदुराचार.

३१५ माधव बोलन्त धनञ्जय महा दुराचारो आतिशय
आन देव तजि मोकसे मात्र भजय
ताकसे परम साधु बुलि मानिया मनत सर्वक्षणे
जिहेतु सम्यक करिसे मोक निश्चय

३१६ भक्तिर महिमा बिपरीत अधर्म तजिया धर्म-चित
होवे शीघ्रे मोक भजि जाना कुन्ती-सुत
आन जि कुतर्की ममानय तया गैया बायो बाधयय
ताहु भक्ति करा अङ्गीकार अदभुत

३१७ मोहोर परम इश्वरर दुराचार भक्तो नुहे नष्ट
किन्तु सिटो भक्त कृतार्थ आति होवय
तोम्हार प्रगल्भ प्रौढि मुनि समस्ते कुतर्क परिहरि
गुरुत्वे तोम्हाक करिबे सबे आश्रय

३१८ आम्हार निर्मल भकतित दुराचारो तरे कोन चित्र
आम्हाक भजिया चण्डालो तरे संसार
स्त्री शूद्र वैश्य आदि जत बिषयत मात्र सदा रत
मोक भजि सुखे इसब होवे उद्धार

३१९ ब्राह्मण क्षत्रिय पुण्य-तनु मोक भजि तरिबेक पुनु
आत अदभुत नाहिके कोनो संशय
राज ऋषि-तनु आछा पाया अनित्य असुख लोक आनि
आति शीघ्रे मोक भजा सखि धनञ्जय

३२ मोते मात्र सदा दिया मन मोर भक्त होवा सर्वक्षण
मोके पूजा मोके मात्र करा नमस्कार
कहिलो तोमात सत्य बाणी पाइवा सुखे मोक महामानी
तुमि प्रियतम सुहृद सखि आम्हार

११९ भक्तिमत्ता मद्गतप्राणा

३२१ भगवन्त देव मिनवति शुनियो अर्जुन महामति
तोमात कहबों परम गूढ़ो रहस्य
ऐश्वर्य बिभूति बले सबे जाने जिटो मोक भरोत्तमे
सिओ भैल मोर दास भैलो मइ वश्य

३२२ मोते हन्ते होवे पराभर मोतेसे प्रवर्ते निरन्तर
इहाक अर्जुन जाने जिटो महाजन
परम विषमी सिटोजन मोर भावे हुया युक्त मन
मोके माम भजे श्रवण करि कीर्तन

३२३ मोतसे केवले दिया चित्त मोते मात्र प्राण अर्पि नित
अन्योअन्ये मिलि मोकेसे बोध करावे
मोके मात्र कहे सर्वक्षणे परम सन्तोष लभि मने
आनन्द-सागरे मजि रहे प्रमभावे

३२४ रहस्यक जाने जिटो लोक सतते कीर्तन करे मोक
धरि दृढ़ व्रत करि यत्न विपरीत
मोर सर्वोत्तम दृढ़ पावे करे नमस्कार भक्तिभावे
तार मोर एड़ा-एड़ि नाहि कदाचित

१२० पुरुषोत्तम-योग

३२५ कृष्ण मिनवति अर्जुनत देहादिक आर्मि अतिक्रमि
हैया आछो शुद्ध बहुलो करि उत्तम
एतेक जाना इतो लोक वेदतो प्रख्यात हुया आछे
मोर नाम इतो प्रसिद्ध पुरुषोत्तम

३२६ असम्मूढ़भावे जिटोजने उत्तम पुरुष मोक माने
ताके सर्ववेत्ता बुलिय सखि अर्जुन
सिटो समस्तके परिहरि काय वाक्य मने यत्न करि
भजय आमाक पुरुष सिटो निपुण

१२१ परमार्थ-तत्त्व

३२७ माधव कहन्त अर्जुनत शुना इटो परमार्थ-तत्त्व
भकतसे मोर महिमा जान निःशेष
तत्त्व-रूप सखि जानि मोक तरिबा दुर्घोर दुख-शोक
अन्त-काले गैया आमात होवे प्रवेश

३२८ कृष्ण निगदति सव्यसाची परमार्थ-तत्त्व इन्ना वाखि
सुदृढ़ बिस्वासे धरम लैयो आमात
मोते मात्र सदा दिया चित्त गायो मोर गुण-नाम-गीत
सकले शास्त्रर कहिलो सार साक्षात

१२२ अर्जुनोद्गार

३२९ कृष्णक बोलन्त धनञ्जय तोम्हार कीर्तने कृपामय
जाति अनुरागे जगते करे हरिष
तोम्हार कीर्तन-अगनिर शिखाये दगध हुया जाति
राक्षस पिशाच पलाइ जाय दशो दिश

१२३ गीता-निर्णय

३३ भगवन्त भक्ति-युक्त पुरुषर आतम-बोध
माधवर प्रसादे निश्चय
कृष्णर कृपात जाना मुचय संसार-बन्ध
एहिमान गीतार निर्णय

---

१९ पद पन्य

१२४ सन्तर कृपात सुवासना

३३१ सुवासना दुर्वासना दुइ मन्थर मोमर मूल हेतु
सुना जेनमते उपजय पुरुषत
सन्तर कृपात सुवासना सुसे पुरुषक पावे जाना
होय दुर्वासना सन्तर मन-कोपत

३३२ महन्तर वाक्य जिटो कर ताक सुवासना अनुसरे
सन्तर कृपात भजे गोविन्दर पावे
जिटो महन्तक निन्दा करे ताक दुर्वासना बेढ़ि धरे
कृष्णक भजिबे नपारय मूढ़भावे

१२५ महन्त-लक्षण

३३३ कृष्ण-पद-मात्र सेवा करे समस्ते कामना परिहरे
वेद-व्यवहार कदाचितो नकरय
कृष्ण-पद-सेवा-सुख मने करे अनुभव सर्वक्षणे
इहाक महन्त बुलिया जाना निश्चय

१२६ धर्मामृत-भाव

३३४ सुनियो सज्जन शास्त्र-सार समस्ते सम्पत्ति जाना तार
हरि भक्ति-रसे सन्तोष मन जाहार
धर्मर निमित्त पानीजुड़ि धरण ध्रापिले जिटोजने
जग मध्ये भूमि धर्मामृत भैल तार

३४० व्यास निगदति मध्यमति शुनियो आनन्दे कर्ण पाति
देओ उपदेस ऊर्द्धबाहु उच करि
एहिमाने मात्र महामन्त्र संसार-घुर्घोर-बिपहारी
नमो नारायण बुलियोक मुख भरि

३४१ सकले निगमे कल्पतरु तार फल महाभागवत
सुक-मुखे आसि भूमित भैला बिदित
रसत चतुर जिटोजन झण्डर करणे दिया मन
परम सन्तोषे पियोक फल-अमृत

३४२ हरिक सततें स्मरा प्रथा समस्ते पुण्यर इसे राजा
हरिक स्मरणे सिजय पुण्य किञ्चुर
नपासरिबाहा कदाचित शुना कथा इटो बिपरीत
हरि पासरिले सिजे पाप निरन्तर

३४३ शुनियो पार्बति तुमि एवे राम राम राम बोला बेबे
तोमार बदन हैबेक श्रेष्ठ अमूल्य
राम राम राम राम बुलि रामते रमोहो सर्बक्षणे
जाना राम-नाम सहस्र नामर तुल्य

३४४ बेदागम आदि करि जत बिस्तर शास्त्रत नाहि काज
बिस्तर तीर्थत नाहि किछु प्रयोजन
संसार तरिते बोला बेबे आपुन मोखर हेतु तेबे
गोबिन्द गोबिन्द बेकतें बोला बचन

१३१ भक्त-विहार

२४५ जाना श्रीराम नामे निज समस्ते अन्तरे मूल बीज
सञ्जीवनी-प्राय यार मने प्रवहाम
यदि हलाहल पान करे प्रलय-वह्नित यदि परे
मृत्युर मुखत प्रवशिल नाहि भय

२४६ पूर्ण शशी पूर्ण दुग्ध सिन्धु सिमत प्रकाश नकरय
कमनीय लक्ष्मी-कान्तो सिमत मम
ईश्वर कृष्णर पाद-पद्म भजि स्पृहाहीन भैल जिटो
सिटो मनगोटे जिमने शोभा करय

२४७ श्रीसुन्दर नाम-गुण-कीर्तन प्रकाशे जि दिनत
सि दिनार प्रति नमस्कार जिटो करे
चिदानन्द घन स्वरूप ईश्वर कृष्णत निष्ठागत
परम आनन्द करे सिटो माथ नरे

२४८ हरि भक्ति राजमार्ग गुरु-पद-नखचन्द्र-प्रकाशित
श्रुति जननीर पद-चिह्न अनुसरि
परा दया मामि आनन्दित स्वमन माहिरे चल्पिन
महाजनसब जानिबा निछ्य करि

१३५ मूढ़दशा

३५३ बालक करोंक बहुमान युवाये सेवोंक पारेमाम
वढे बिषयर बहिर्भूत हुया गैल
भोग करिवाक नपारय तथापितो आशा नछाड़य
हरि हरि हरि किनो विपरीत भैल

१३६ सफाई विभाग

३५४ वैष्णव निन्दक सूचकक विष्ठा फुटा ग्राम्य सूकरक
बिधाताये बुद्धको सजिलन्त दायादरे
सूचके जानिवा निरन्तरे साधुसकलक शुद्धि करे
जिमते ग्रामक शूकरे शोधन करे

१३७ अकारण वैरी

३५५ मृग मीन महासाधु नरे मनर सन्तोषे तृण जले
हिंसा-शून्य हुया थाकय जीवन धरि
तथापितो इटो तिनियर कैवर्त पिशुन व्याधसबे
इटो जगतत तिनि अकारण वैरी

१३८ वैषम्य न

३५६ समस्तरे आत्मा नारायण आत्मा-सुखे रति सर्वक्षण
एहि हेतु हरि समस्ते प्राणीतो सम
नाहक किटो मये सुखे तरे नभजि संसारे मजि मरे
कृष्णक विषम बोलय कोन अधम

---

२१ निगमन

१३९ पियो पियो पियो

३५७ पियो पियो पियो अमिया-माधुरी
हरि-नाम राम राम
दूरने मेलिया मैयो आन जत
मन-काम राम राम

भाल उपाय पाइलो माइ माइ ए
राम-नाम निगम रहस्य
एक-चित्त-मने भाव भाइ भाइ ए
चार नाम हार करा वस्य

१४० अभ्यासे आरु परम यतने

हरिर शरण मैया जिटोजम ए
हरिर चरित्र श्रवण कीर्तन करे
स्वाँग आगार संसार-सागर ए
मिथ्या सहजम मानि सप्रयास तरे

राम कृष्ण राम कृष्ण बोल माइ ए
परम जनम नभिया मन मम्याय
[illegible]मार म भाग्य गुमि मोर माणा [illegible]
[illegible] भागिरबा कोन उपाय

१४१ राम-नामखानि फुरियो गाया

३६१ राम कृष्ण हरि बुलिया मुखे
हरि-पदे मन मजायो सुखे
राम बुलि फुरा बाहु आफाडि
कपटर मोट पेलाइयो फाडि

३६२ राम-नामखानि फुरियो गाया
कि करिबे पारे हरिर माया
राम-नामखानि सैयोक काटि
हेलाये मारियो यमेर घाटि

३६३ राम-कृष्ण-नाम जप सघने
हरिर चरण नेदिया मने
राम कृष्ण हरि बुलियो माष्टे
मिलिबे मरण हाटे कि बाटे

१४२ कि कार्ये मनुष्य भैल पामर

३६४ नकरे कीर्तन हरि-नामर
कि कार्ये मनुष्य भैल पामर
हरि-कीर्तनत नकरे रति
पशुतो अधम सिटो कुमति

३६५ नुफुरे यथा हरि-गुण गाया
जानिबा मुहिले हरिर माया
हरि-कीर्तनत नेदिले चित्त
सिटो भाग्य-शून्य भैल बञ्चित

१४३ बिचारि देखियो

३६६ बिचारि देखियो पामर मनाइ ए
इह-परलोके हरिसे सुहृद बन्धु। राम राम
मजिया खुस सुहृद मनाइ ए
हरि-गुण-नाम अपार आनन्द सिन्धु। राम राम

३६७ निश्चिन्ति भाछस केमने मनाइ ए
सुबेर सागर हरित नकरि रति। राम राम
भालाख देखियो भजियो मनाइ ए
मृत्यु भय-हारी हरिसे परम गति। राम राम

३६८ राम कृष्ण राम कृष्ण बोल रे पामर मन
मुलिया कमने पापी मर
आर माया-धासे बन्दी हुयाछ पामर मन
तान दुइ चरणत धर रे पामर मन

३६९ गोविन्द बोल मनाइ
मुकुन्द बोल मनाइ
ब्रह्मा हरो आस शरण पसम
आमर कोम बराइ

१४४ कैतव तेजियो

३७० आवत कैतव मेइस मन
तावत मपाइवि हरि-चरण
कैतव तेजिया भजियो हरि
तेबेसे हरि सेब दास करि

३७१ कतव सत्य ज्ञान भाग करि
भजियो हरिक कैतव एडि
हरित विनाइ सबे कैतव
भज हरि-पावे करि उत्सव

३७२ सर्ब पुरुषार्थ कैतव नाम
हरि नाम सत्य वेद प्रमाण
हरिर आश्रय नेडियो भाइ
ऐकान्तिक सुख तेवेसे पाय

१४५ मुक्त-सम्मत

३७३ क्षणिक जीवन जानि मनाइ
तरियो सुखे हरि-गुण गाइ
निर्गुण हरिर गुणक गाया
परमानन्द पाइवा तेजि मामा

३७४ हरि-गुण-नाम निगम-तत्त्व
मुकुतसबरो मुख्य-सम्मत
जानि हरि-पावे नेडियो भाव
कहे मूढमति माधव दास

---

३. महिमा

१५२ माधव-नाम

३८६ माधव माधव नाम वचनत सुमरय
माधव माधव हृदयत
निरन्तरे साधुसवे माधव माधव नाम
उच्चारय समस्ते कार्यत

३८७ परम मङ्गल-रूप माधव माधव नाम
जितो महाजने उच्चारय
तार अमङ्गल-रूप गुचय संसार भय
माधवर निकट पावय

३८८ दुस्वप्न-नाशन हटो माधव माधव नाम
दुष्ट-ग्रह भय-विमोचन
परम सम्पद-रूप आनि माधवर नाम
सर्वदाये करियो कीर्तन

३८९ परम चतुर सिसि मुदित कुसल मति
जिटो माधवर गुण गावे
मिछा कलेवरगोटे मुकुति-वाणिज करि
भव हरि माधवक पावे

३९ जितने एकान्त चित्ते माधवक भजि निते
फुरे माधवर गुण गाइ
दुर्लभ अमृत येन सितने करिले पान
मधुर पियाक आर नाइ

३९१ भज भाइ माधवक स्मर भाइ माधवक
गाव भाइ माधवर गुण
निर्विन्नि आपुन भार सुखे आपुनाक तार
हुयो भाइ परम निपुण

१४८ अन्तर्नाद-श्रवण

३८० हरि-भक्ति-सरोवरे सन्तोष-अमृत-जले
कृष्ण-पाद-पद्म प्रकाशय
राम-नाम राजहंस छामिया आराव करे
शुनि आति कौतुक विस्मय

१४९ विघ्नत्रय

३८१ समस्त तीर्थर स्नान करिलण सर्व यज्ञ
दीक्षित भैलेक सिटोजन
समस्त चामर फल सिसिजने पाइले आदि
जिटो करे हरिर कीर्तन

३८२ माधवे घोमन्त मोक्ष कृष्ण कृष्ण कृष्ण बुलि
सदाय सुमरे जिटोजने
यम हन्ते येन पद नरकरपरा ताकु
आपुनि उधारो रक्षु मने

३८३ यद्यपि दुर्जन कलि हरिर भकति-पथ
करिलेक विरस-प्रचार
एकान्त शरण जिटा श्रवण-कीर्तन करे
आचरो नचाय कलि तार

१५० जयोवसी

३८४ परम-पुरुष तव परम-कारण प्रभु
परम ईश्वर भगवन्त
सदानन्द सदाशिव सत्य सनातन हरि
जय जय अचिन्त्य अनन्त

१५१ अष्टनाम

३८५ अच्युत केशव विष्णु हरि सत्य जनार्दन
हंस नारायण अष्ट नाम
परम मङ्गल-रूप जिटो अहर्निशे लवे
तार पूर्ण होवे मनकाम

१५२ माधव-नाम

३८६ माधव माधव नाम वचनत सुमरय
माधव माधव हृदयत
निरन्तरे साधुसब माधव माधव नाम
उच्चारय समस्ते कार्यत

३८७ परम मङ्गल-रूप माधव माधव नाम
जिटो महाजने उच्चारय
तार अमङ्गल-रूप गुचय संसार भय
माधवर निकट पावय

३८८ दुःस्वप्न-नाशन इटो माधव माधव नाम
दुष्ट-ग्रह भय विमोचन
परम सम्पद-रूप जानि माधवर नाम
सर्व्वदाय करियो कीर्तन

३८९ परम चतुर शिखि बुढिव बुधर माति
जिटो माधवर गुण गावे
मिछा कल्मषसाट मुकुति-वाणिज करि
भव तरि माधवक पावे

३९ जिमने एकान्त चित्ते माधवक मजि निते
फुरे माधवर गुण गाइ
दुर्लभ अमृत जैन सिजने करिले पान
मधुर विपाक आर नाइ

३९१ भज भाइ माधवक स्मर भाइ माधवक
गाय भाइ माधवर गुण
निचिन्ति आपुन भार सुखे आपुनाक तार
हुयो भाइ परम निपुण

१५६ नामतीर्थ

३९५ राम राम राम वाणी परम मङ्गल-रूप
 यार मुखे प्रकाश करय
 चिरकाल महातीर्थ करिया पवित्र हया
 ताको कदाचितो तुल्य नय

१५७ अन्तिम सत्य

३९६ जगत-आश्रय कृष्ण ताहान अव्यय स्थान
 ताक प्रति येवे आछे मन
 भगवन्त ईश्वरर चरण-पङ्कजे सदा
 हयो तवे एकान्त-शरण

१५८ समस्ते प्राणीर अधिकार

३९७ परम निर्मल धर्म हरि-नाम-कीर्तनत
 समस्ते प्राणीर अधिकार
 एतेकेस हरि-नाम समस्ते धर्मर राजा
 एहि सार शास्त्रर विचार

३९८ वर्णाश्रम-धर्म यत यार येन विहि आछे
 तारसे करवो अधिकार
 हरि-नाम-कीर्तनत नाहिके नियम एको
 एतेकेसे धर्म माझे सार

३९९ येवर विहित यत आछे धर्म संसारत
 सबे हरि-नामर किङ्कर
 हेन जानि चिटोमन नामर कीर्तन करे
 सेहिसे परम साधु नर

२४ रत्नत्रय

१५९ गुणग्रहण

४ अधमे केवले दोष लवय मध्यमे गुण
दोष सबे करिया विचार
उत्तमे केवले गुण लवय उत्तमोत्तमे
अल्प गुण करय बिस्तार

१६० पुरुषार्थ

४ १ अविद्या-जनित सुख सत्य लोक आदि करि
आत निरपेक्ष निरन्तर
केवले चिदात्म-शुद्धि-करणेसे मात्र जाना
पुरुषार्थ ममुक्षजनर

४ २ विद्या-अविद्या जन्य-सुखे निरपेक्ष हुया
करिले आपुन मन थिर
सकले जगत हेरो वासुदेवमय मात्र
पुरुषार्थ जानिबा गभीर

४ ३ समस्ते सुखके तेजि पुरुषोत्तमर प्रेम
भकतिक करिल आश्रय
भकतसबर एहि पुरुषार्थ मनोनीत
आमो सब अधिक पावय

१६१ विधि-मुक्ति

४ ४ मुमुक्षुजनर येवे अविद्या-जनित सुखे
विरकति भैल अतिशय
केवले आत्मात मात्र सदाये रमण करे
तेवे विधि-किङ्कर गुचय

४ ५ ज्ञान-निष्ठजने विद्या-अविद्या-जनित दुयो
सुखे विरकति भैल येवे
वासुदेवमय मात्र देखय जगत इटो
विधिर किङ्कर गुचे तेवे

४ ६ पुरुषोत्तमर प्रेम भकति-सुखक मात्र
निश्चय करिला चित्तोमन
शरण-कालरेपरा विधिर किङ्कर गुचि
करे सदा श्रवण-कीर्तन

१६२ भारत रत्न

४ ७ भारत रत्नर द्वीप मनुष्य-शरीर नौका
राम-नाम महारत्न सार
हेनय वाणिज पाइ चिटो जीवे नकरिल
ताक परे दुखी नाहि आर

१६३ रत्न-प्रकाश

४ ८ परम अमूल्य रत्न हरिर नामर पेड़ा
अति गुप्त-स्वरूपे आछिल
लोकक कृपाये हरि शङ्कर-स्वरूपे आसि
मुद भाङ्गि समस्तके दिल

---

२५ प्रभाव

१६४ वह्नि-वायु-संयोग

४०९ श्रीराम-नाम भव-अरण्यक
वाड़व अगनि सम
श्रीराम-नाम अमर उत्सव
मन्त्रको मन्त्र उत्तम

४१ राम अक्षर 'रा' पद भेल
प्रचण्ड वह्नि-निश्चय
'म' वायु सम अधर्म-अरण्य
वह्निया भस्म करय

४११ कुकथा पाषण्ड संवाद विवाद
पर्वत भाँति निठुर
रामकृष्ण-नाम-वज्रक प्रहारि
करा ताक मथिमुर

४१२ सुदृढ़ विश्वास करि जिटोजने
सदा राम-नाम गावे
ताक पाप-ताप विपा दुष्ट कलि
दूरतो दूर पड़ावे

४१३ अमय अक्षर राम-कृष्ण-नाम
कोमलरो सकोमल
राम-कृष्ण-नाम सभारो मधुर
मङ्गलरो सुमङ्गल

१६५ हरेरप्यगम्य

४१४ मुमुक्षसबरो मनक टानिया
आनम हरिर गुणे
एक-प्राण हुया महन्तसकले
गावय कह्य सुने

४१५ हरिर नामर अनन्त महिमा
जानि महाजने गान्त
आपुन नामर महिमाक हरि
आपुनि अन्त मपान्त

४१६ हरिर नामर अनन्त प्रभाव
कोने कहि पावे सीमा
संसार बिनाशे हरिको प्रकाशे
नामर महामहिमा

४१७ हरिर नामत एकोवे विधिनि
नाहिके थाना निश्चय
आन यत धर्म ताहारो विधिनि
नामेसे दूर करय

१६६ धर्मोक्त धर्म

४१८ धर्म पृथिवीर आगत कहिला
महाभागवत-धर्म
मुकुति-सुखर केवले आश्रय
आना माधवर धर्म

४१९ मन्यत्र शावने कोनो विचक्षण
जनक मोक्ष विषय
कृष्णर जन्मर कर्मर कीर्तने
मुकुतिको बिकम्मय

१६७ रुआदि-सम्भूषण

४२ राम हेनो इटो दुगुटि अक्षर
मलर नाहिके सीमा
मुकुति-सुखको करिले अधीम
आछोक आन महिमा

४२१ जिटो रुद्रदेवे परम लीलामे
जगतके सहरन्त
रामर नामर तेहो हुया वस्य
दिने रात्रि सुमरन्त

४२२ नारद सनत-कुमार अनन्त
शुकमुनि आदि करि
मुकुति-सुखक ठेलि राम-नाम
सदाय फुरे सुमरि

४२३ इटो राम-नामे आपुनार गुणे
ईस्वरको करे वस्य
एतेके जानिया राम-नाम बिने
शास्त्रतो नाहि रहस्य

४२४ मानुष बानर राक्षस तरिल
रामत करिया सेव
हेनय परम कृपाल देवता
राम बिने नाहि कव

१६८. धेनु-वत्स-न्याय

४ १ मापवर नाम वत्स प्राय भैल
भक्त ताहु भैया जान्त
बन्द ईस्वर हरि धनु जेन
तार पाछ पाछे धान्त

२६ प्रेरणा

१६९ कलि-माम्म

४२६ तारासवे पूज्य तारासवे धन्य
तारासे सुकृत धन
कलि-युगे हरि नामको बोलावे
आपुनो करे कीर्तन

४२७ धन्य कलि-युग धन्य राम-नाम
धन्य धन्य नर-काया
भाग्यहीन जनो जपि राम-नाम
तरय दुस्तर माया

४२८ सत्यादिर लोके कलित जनम
वाञ्छा करे निरन्तर
हरि-गुण गाया निश्चये कलित
हैब नारायण-पर

४२९ मुकुत कोटिर माजत दुर्लभ
जाना नारायण-पर
कलि-युगे हैत नारायण-पर
हैबे लोक निरन्तर

१७० नित्य-सन्ध्या

४३ चैतन्य-ईश्वर-आदित्य जाहार
हियात भैला प्रकाश
काम-मेघ प्राय अविद्या-अन्धार
ताहारो होवे विनाश

४३१ चैतन्य-आदित्य हृदय-आकाश
सर्वदाये प्रकाशय
सन्यासत नाहि सन्ध्या-उपासना
करिबो कोन समय

४३२ जिहेतु गोविन्द निज-यश-प्रिय
भक्त-वत्सल हरि
सिहेतु सदाय नाम-गुण शुनि
थाकन्त आनन्द करि

१७१ गाम्भीर्य-ध्यान

४३३ गमन गम्भीर वचन गम्भीर
गम्भीर नाभि-कमल
एहि निगम्भीर स्मरणे कृष्णर
निम्न महामङ्गल

१७२ युग-धर्म

४३४ मिनति वचन बोलो सर्वजने
सुनियो सादर मम
आपुन कुशल चावा जबे तेबे
नेरियाहा युग-धर्म

४३५ सत्य-युगे ध्यान त्रेता-युगे यज्ञ
द्वापर-युगत पूजा
कलित हरिर कीर्तन विनाइ
आवर नाहिके दुवा

४३६ कलित हरिर कीर्तन एरिमा
अन्यत्र धर्म आचरे
मिछात केवल श्रम मात्र पावे
एकोवे फल नधरे

४३७ संसार तरिते इच्छा आछे यार
करियो हरि-कीर्तन
परम निर्मल गति पाइबा सुख
छिण्डिया कर्म-बन्धन

१७० नित्य-सन्ध्या

४३ चैतन्य-ईश्वर-आदित्य आहार
हियात भैला प्रकाश
काल-मंघ प्राय अविद्या-आन्धार
ताहाते होवे विनाश

४३१ चैतन्य-आदित्य हृदय-आकाशे
सर्वदाये प्रकाशय
उदयास्त नाहि सन्ध्या उपासना
करिबो कोन समय

८ जिह्नु गोविन्द निज-भक्त-प्रिय
भक्त-वत्सल हरि
सिह्नु सदाय नाम-गुण शुनि
धायन्त आनन्द करि

१७१ गाम्भीर्य ध्यान

गमन गम्भीर वचन गम्भीर
गम्भीर नाभि रमण
गाढ़ सुगम्भीर स्मरण गुणगर
सिन्धु समानतुग

२७ योग-सार

१७४ राम बुलि तरे गिरि आसम कछारी

४४३ अनन्त नारद शुक सनतकुमार
तारा गावे हरि-यश जानि योग-सार
हरि-नाम-कीर्तनर शबद तुमुल
आनन्दर भरे होबे भकत आकुल

४४४ राम-कृष्ण-नामर देखियो केन बल
अधमको करे नामे परम निर्मल
हरि-नामे नाहिके नियम अधिकारी
राम बुलि तरे गिरि आसम कछारी

१७५ जेइ नाम सेइ हरि

४४५ हरि-नामे यत पाप संहरिते पारे
ततेक पातकी पाप करिबे नपारे
आपुन नामर सङ्ग नछाड़न्त हरि
जेइ नाम सेइ हरि जाना निष्ट करि

४४६ हरि-चरणत प्रेम मिलिल आहार
आन कोन सम्पत्ति हरिओ भैल तार
जार मुखे राम-वाणी भासे सरसरि
जानिबा निश्चय तात वश्य भैल हरि

४४७ हरि जार वश्य भैल तार किवा रैल
हरिर कृपार पात्र सिसिखन भैल
रामकृष्ण-नामर कल्लोल-रोल शुनि
मेकुरामुखा यम-दूत पलावे आपुनि

१७३ जय जय शङ्कर

४३८ वैकुण्ठ प्रकाशे हरि-नाम-रसे
प्रेम-अमृतर नदी
श्रीमन्त शङ्करे पार भाङ्गि दिला
बहे ब्रह्माण्डक भेदि

४३९ गोविन्दर प्रेम अमृतर नदी
बहे वैकुण्ठरपरा
चारि पुरुषार्थ ताहार निझरा
हरि-नाम मूल धारा

४४० हरि भकति-दान दिला जगतके
तारिला संसार-सिन्धु
हेनय कृपालु शङ्कर बिनाइ
नाहि नाहि आन बन्धु

४४१ हरि भकतिर पातिलन्त हाट
शङ्करे जगत जुरि
राम-नाम रत्न बहाया जगते
धन्य वैकुण्ठ पुरी

४४२ श्रीमन्त शङ्कर हरि भकतर
जाना जन कल्पतरु
ताहान्त बिनाय नाहि नाहि नाहि
आमार परम गुरु

---

२८ नामायन

१७६ 'रा-म' कपाट

४४८ रा सबदक उच्चारन्ते राम राम राम राम राम
मुख हुन्ते वाज हुया पलाय पापमाने
पुण्यमाने होबे अभ्यन्तर राम राम राम राम राम
म बन्धि आति कपाट मारय टाने

१७७ रामत करिया रामनाम पार

४४९ अनन्त-धामनि तुमि राम लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण
हनुमन्त आदि महा महा वीरगणे
आनि तरु ग्ला पर्वतक कराव योजन समुद्रक
मन बान्धि पार भल्लाहा महा जतने

४ न प्राण प्रभु ग्यपति राम गाम राम राम राम
नामान रग्या तनु गप-भाम पार
जिना मम-बाम करि नरे गाम राम राम राम राम
अपार ममार-ममद्र हाबे पार

१७८ कृष्णमित कृष्ण एव सर्वति

। ण प्रियतम आत्मा निज गाम राम राम राम राम
ग । न अममानबा भय मम्नि
गार जिना नान मांहम गाम राम राम राम राम
जिन न न ग मांहम हरि भागुनि

२९ भक्ति

१८७ नाम-प्रताप

४६१ हरि-कीर्तनर ताप लागि पळाय पाप सभो दिशे भागि
हेरा पाइस्रे धुलि मयत मिडि फ्वाड़े
ब्रह्माण्ड भितरे नपाइ ठाइमाउर ब्रह्माण्डक पसाद भाय
नामे खेदि नेन्त ब्रह्माण्डोपरि बागरे

४६२ पाछे पाछे हरि-नामे गवे एनो ब्रह्माण्डव धान नदे
महा महा पातेकर गर्व भैल चूर
एबे कैन आइबो बसि हरि काम्पे सर्व पाप तरहरि
हरि-नामे पाइ दहि करिलक चूर

४६३ नाम पुण्यक शुद्ध करि रैग नाम तावे भरि-पूरि
धर्ममय तनु मे गैल हरि भक्त
हरिर करुणा भैला ताक उच्च करि दिया हरि भक्त
परम सन्तोष माथ आति आनन्दत

१८८ तारिते शीघ्रे नपारे

४६४ शुद्ध वा अशुद्धे एक नाम बास वा धन वा मने स्मरे
अपराध-हीन पुण्यक मर्धे तार
देह धन जन अर्थ लोभ पापण्ड बुद्धिये जिटो लब
मेहि हरि नाम तारिल शीघ्र नपार

१८३ भक्ति-सरोवरे

४५६ भक्ति-सरोवरे कृष्ण-पद-पङ्कज पड़ि निरन्तरे
परम आनन्दे भकत भ्रमरा-थाके
कृष्ण-यश रस-मधु-पाने मत्त हुया अति सावधाने
राम-नाम राजहंस-राव शुनि थाके

१८४ कथने-मथने

४५७ एकान्तिक महामनि यत निवर्तिया विधि-निषेधत
निगम भावत चिति हुया निरन्तरे
जानि पुरुषार्थ सार-तत्त्व कृष्ण-कथामृत-सागरत
कथन-मथने सदाये रमण करे

४५८ हरिर गुणर देखा बल लभिलेक जिटो मोक्ष-फल
ताहारासबारो चित्तक आनन्द टानि
एतके निपुण जिटोजन कृष्णर चरणे दिया मन
हरिर गुणक नछाड़िवा सार जानि

१८५ शुकानुभव

[illegible] शुक निगदन्ति परीक्षित यदि आमि निगुणत चित
तथापि उत्तम-श्लोकर महिमा-गुणे
करिलुं मात्र वश्य चित भागवत-ग्रन्थ विपरीत
परम आनन्द पढ़िला आमि आपुने

१८६ तिनिरो उत्तम भक्ति

[illegible] मन्ति स्थिति प्रत्यय हेतु समस्त विविध कर्म हरि
करा जिना मात्र गाय पुनः प्रत्यय
अवगत-रामा भगवन्त ताहान चरण-पङ्कजत
तिनिरो निरन्तर उत्तम भक्ति हावय

---

१८९ विम्वेश-प्रशंसा

४६५ जिविशत महाभक्तसवे श्रीमन्त कमललोचनर
परम सन्तोषे कीर्तन सिटो करय
सिविशक नमस्कार करि दुर्घोर संसार सुखे तरि
मापुनि अच्युत-स्वरूप सिटो होवय

४६६ रमानन्द-पद-युगलर मकरन्द-मधु-व्रत प्राय
भक्तसकले जिविशत प्रकाशय
सिविश आनिवा गङ्गाग्रेकी अनेक प्रवाह रूपे सेवि
परम निर्मल स्वरूपे शोभा करय

४६७ श्रीमधुद्विप ईश्वरर कीर्तन मङ्गल निरन्तर
जिटो भूमि मागे धूल रूपे होवे जात
सार धूलि जिटो घिरे मरे मिछमे आनिमा सिटा मरे
कृष्णर परम वल्लभ होवे साक्षात

१९० साधन-सोपान

४६८ ह सब महद्वर हरि तनु कथामृत पान करि
वढाया भक्ति मनक शुद्ध करय
वैराग्यसे मार भैमा जार हेनय बोधक लभि पुनु
परम निर्मल वैकुण्ठ गैया पावय

१९१ एकान्त भक्त

४ एकान्त भकत आगे कय किछु अर्थ ताहा यथायथ्य
सदा अव्यभव हरि-गुण-नाममय
परम मधुर रूप-प्राण जात पर काम नाहि रय
परम आनन्द-समुद्र माजि रहय

३० पूर्णाहुति

१९४ अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायक

८७२ गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द
गोविन्द राम मुरारि
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड हरि अविकारी

४३८ गोविन्द राम मुरारि मुकुन्द राम मुरारि
पतित पावन दुख विमोचन
भक्तन भयहारी

८७ परम पुरुष परम आनन्द
परम गुरु मुरारि
अनादि अनन्त अच्युत गोविन्द
भक्तन भयहारी

१९७ नाम-महिम्न

४८४ राम कृष्ण राम कृष्ण राम । हरि हरि
रामते रमोहो अधिराम । राम राम
राम-नाम धर्म अनुपाम । हरि हरि
पूरे भकतर मन-काम । राम राम

४८५ कलि-युगे राम-नाम सार । हरि हरि
राम-नाम बिने नाहि आर । राम राम
राम बुलि पाव भव-पार । हरि हरि
राम-नाम जगत-उद्धार । राम राम

४८६ राम-नाम अमूल्य रतन । हरि हरि
राम-नाम बिने नाहि धन । राम राम
राम-नाम भक्ति-अवलम्बन । हरि हरि
जप राम-नाम अनुक्षण । राम राम

४८७ राम-नाम भकति सुगम । हरि हरि
नाहि भकति राम-नाम सम । राम राम
राम-नाम धर्मते उत्तम । हरि हरि
राम-नाम पातकर यम । राम राम

४८८ राम-नामे धर्म शिरोमणि । हरि हरि
राम-नाम पापर अगनि । राम राम
राम-नाम मृत्यु-सञ्जीवनी । हरि हरि
राम-नाम मुक्तिमोक्ष खानि । राम राम

११९ नाम विजय

४९४ हियार माजे नामर भाण्डार
मुखे बाज हय
राम-नामे मारणा मारे
पाप-कटकर क्षय

४९५ पाप-विपक्षक संहरि हरिर
नामे खलखलि हासे
सकल धर्मर उपरे बसिया
हरिर नाम प्रकाशे

४९६ मुकुति-सुखक भस्म करि हरि
नामे आनन्दत नाचे
पुरुषे सहिते सखित करिया
धर्म्म हरिर काछे

४९७ आपुन नामर महिमा देखिया
हरिर आनन्द बाढ़े
जिटो नाम लय हरि तार हय
ए पुनु रहस्य बरे

४९८ हरि-गण-नाम गाविया पुरुषे
रहय हरिर पाशे
हरिर चरण हृदये धरिया
कहय माधव दासे

२०० जानिया भजियो भाइ

४९९ ए माधव भाव भज भगवन्त भक्तिभाव
भगवन्त भजिया परम गति पाव
भगवन्त मर्मजि सत्य यम-ठाव
भगवन्त भजनर शमन नपाव

५०० भगवन्त भजिया जनम पाहुदाय
आन जन गये मिछा भक्तिर अभावे
जानिया भजिया भाइ भगवन्त-पावे
एहु रग माधव मनमणि गाय

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

नामघोषा-सार के कठिन शब्दों का अर्थ

[अंक पोथाओं के हैं]

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अंजलीया — प्रणाम निवारनेवाला	२८१	आलात — आश्रय	२९
असन्त — असत्य	२११	आवर — और, अन्य	२४
आउर — अन्य	४११	आवे — अब	१२९
आकल — पकड़	२७१	आसि — आकर	११४
आके — इसको	२	आसे — है	८४
आचमिल — आचमन	३५	इ — यह	४१७
आछस — हो	१६७	इटो — इस यह	२७
आछा — है	१	इबार — इस बार	५८
आछाड़ (र) — ठोकना (धातु आछाड़ि— धातु ठोककर अर्थात् निर्णय होकर)	१११	इबलि — इस बार	१११
आछे — है	१८	इसब — ये सब	४८
आछोक — रहने को	४२	इसे — यह	१४२
अत्त — इसमें	१११	इहात — इसमें	२९
आन — अन्य	११	उधार — उद्धार करना	१८२
आपुन-तुरे — अपने आप	२८३	उपंग — तैरना	११
आयाआत — आना-जाना	१९२	एकत्राखि — एक साथ एकत्रित	२४८
आर — और	११	एकान्त — अनन्य	१२७
आर — [illegible]	१६१	एकोवाखि — एकमात्र	१५
आराव — ध्वनि	५८	एटोवे — कुछ भी	४११
		एत — इतने	११७
		एतावत — ऐसे	१८१
		एतिक्षणे — इस क्षण अभी	२१७

नेवाछा—देवे नही ७७
नेस्ते—के जाते हुए ४६१
नोबोबय=काफी मही १
नोबोल्लस—बोलता नही ४७
पट आवरण ४७
पवे इसलिए १५८
पर पड़ना १४५
परियार परिवार २१५
परे श्रेष्ठ १९१
पस् प्रवेश करना लेना ११
पाछ पीछे ९
पास खोसना ९५
पार्मैमुखि पावमाण मृना ११४
पारेमाम माफ्कम्स
(जितना समझ हा) १५३
पासा बड़ २९५
पासर भजना १४२
पुगु फिर भ ३५
पूप् पाजना पालना ४
पूर पुरा करना ६१
पहलाइयो कफिये ६१
पर घमना १
बड़ प्रमाण म १
बयम आरज ७४
बर ८
बराब न ग न बा ३
ब न न ६१

बहुतर—बहुत १२
बसार—कोटना ४११
बाबबाबि करि—(चारों
ओर से) घेरकर २१८
बाखि—चुनकर १४५
बाज—प्रकट ११
बाखी—बन्ध्या २७५
बाधू (पकाइबेक)—दूर
भागेगी २८१
बापराम—धर्मपिता ४१२
बाम—बजाना ११६
बामुह—बन्ध होना ५
बिका—बिक जाना ११९
बिचार—खोजना ५७७
बिनाह, बिनाय—बिना ४४
बिने—बिना ५
बिहि=विहित ११८
बुर—डूबना ८९
बक्त—स्पष्ट १४
बैकामुखा—टेढ़ा मुँह ४४७
बेड़ाह चारो तरफ बढ़ते
चलो ११५
बहा व्यापार ४४१
भरि—पैर १८१
भाग फोड़ना ९१५
भांड टपना ५९
भाइ बचना करना ११

भिखारी—भिखारी १४७
भिड़ि—अति वेग से ४६१
भुंज—भुमताना भागने को
बाध्य करना ७९
भैल—हुआ ५५
मजु—डूबना १५
मनगोबे—मन (मोटे-उपपाद्य) १४६
मरन्तामन=मरनेवाला २१७
मरिचथ—मुक्ति छुटकारा १५१
मविमूर—चूर्ण विदीर्ण २२८
माझत—बीच में २१२
मार—मात वहिन हुआ १२
मारया मारे—हमला करना ४९४
मिछा—मिथ्या २९
मिनति—प्रार्थना ११४
मुर—दसकन ४ ८
मेलि—उठाकर ११६
मोट—ऊपर का आवरण
स्वरूप १११
मोहोर—मेरा १ २
र—रहना ४
रंग—मानव १८०
रांगा—रक्तवर्ण २८५
राव—रव आवाज ४५६
ल—लेना ४
लर—धीमा होना २५९
लबइ—दीखने हुए १९७
सांग—सान्निध्य २११
संक—सन्देह १८७
सम्मन=भ्रम ४९९
सुझ—चुकाना ४७१
सचित=सचित्त ४९६
सघन—बार-बार १११
सगमोरे—साथ ४५१
संजात—विश्वास २१
समिधान—उत्तर ७१
समूलि=पूरी तरह से १५
समे—तुल्यत्वे समानत्वे १२१
सरसरि—बहरहु, बराबर ४४६
सरि—श्रेष्ठ समान १९१
सबारो—सबका ४७
सबे (सब)—सब ११
साजु—प्रस्तुत तैयार २८१
साते-पचि—पाँच-सात व्यक्ति
(एकत्रित होकर) २८१
सि—उस १५५
सिजय—सिद्ध या सम्पन्न होना १४२
सिठो—वह २ १
सिमत—उस तरह १४६
सिति—उसीने २ १
सिहेतु—जिस कारण ७८
सुबक—निरक गम १५४
सेह—वही ४७९
सेव—प्रणाम नमस्कार ५